इकाई 2 : अनुवाद की प्रविधियाँ

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 अनुवाद की प्रविधियाँ : अर्थ और स्वरूप

2.3 अनुवाद में विभिन्न प्रविधियाँ अपनाने की आवश्यकता क्यों?

2.4 अनुवाद की प्रविधियों के प्रकार

2.4.1 अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों के प्रकार : विद्वानों के अभिमत

2.4.2 विद्वानों के मतों का आलोचनात्मक विवेचन

2.5 अनुवाद की विभिन्न प्रविधियाँ

2.5.1 अंगीकरण (Adoptation/Borrowing)

2.5.2 अनुकूलन (Adaptation)

2.5.3 शब्दानुवाद (Word for word translation)

2.5.4 भावानुवाद (Paraphrase)

2.5.5 प्रतिस्थापन (Substitution)

2.5.6 परित्याग (Deletion)

2.5.7 अनुवादकीय टिप्पणी (Translator's Note/Complementation)

2.6 सारांश

2.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.8 उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप यह समझ सकेंगे कि :

- अनुवाद की प्रविधियाँ से क्या अभिप्राय है;
- अनुवाद कर्म के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रविधियों को अपनाने की आवश्यकता क्यों है?;
- विभिन्न विद्वानों की नजर में अनुवाद की कौन कौन–सी प्रविधियाँ हो सकती हैं; और
- अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों के बारे में उपयुक्त उदाहरणों के साथ विस्तृत जानकारी हासिल कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

'अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि' से संबंधित अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के इस दूसरे पाठ्यक्रम में आप सबसे पहले अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि से परिचित हो रहे हैं। इस क्रम में आपने पहली इकाई में 'अनुवाद की प्रक्रिया' की जानकारी हासिल की। अब हम अनुवाद की प्रविधियों पर विचार करेंगे।

अनुवाद एक व्यावहारिक गतिविधि है। यानी यह किसी एक ही निर्धारित परिपाटी या आधार पर संपन्न होने वाला कार्य नहीं है। यह अनुवादक की योग्यता–क्षमता पर निर्भर करता है कि वह अपने महत्वपूर्ण कार्य को कितनी कुशलता से कर पाता है। अपने इस कार्य को भली प्रकार से पूरा करने के लिए वह तरह–तरह के तरीके अपनाता है, जिन्हें 'अनुवाद की प्रविधियाँ' कहा जाता है। अनुवाद की प्रविधियों को अन्य कई नामों से भी जाना जाता है, जिनके बारे में इस इकाई के अगले भाग में स्पष्ट किया जाएगा। प्रस्तुत इकाई में अनुवाद की इन विभिन्न प्रविधियों के बारे में उपयुक्त उदाहरणों के साथ विस्तार से चर्चा की जा रही है। उदाहरणों के माध्यम से आपको उन स्थितियों का बोध होगा, जिनमें इन प्रविधियों को लागू किया जाता है।

अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों पर विचार करने से पूर्व इस इकाई में आपको यह जानकारी भी दी गई है कि इन्हें अपनाने की आवश्यकता क्यों पड़ती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि किन्हीं दो भाषाओं में पूरी तरह से समानता नहीं होती है, शब्दों, वाक्यों और अभिव्यक्तियों आदि के स्तर पर उनमें अंतर पाया जाता है। अनूदित पाठ को स्रोत भाषा पाठ के समतुल्य बनाने के प्रयास में कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हुए अनुवादक विभिन्न प्रकार के उपाय अपनाता है ताकि अनूदित पाठ संप्रेषणीय बन सके। अनुवाद में इन विभिन्न उपायों को 'अनुवाद की प्रविधियाँ' कहा जाता है।

आइए, अब हम सबसे पहले पहले इस प्रश्न पर विचार करें कि 'अनुवाद की प्रविधियाँ' से क्या अभिप्राय है और इसका स्वरूप क्या है?

2.2 अनुवाद की प्रविधियाँ : अर्थ और स्वरूप

व्यावहारिक गतिविधि होने के कारण अनुवाद कार्य के दौरान अनुवादक को पाठ, उसमें व्यंजित अर्थ, संदर्भ और शैली आदि से संबंधित विभिन्न प्रकार की समस्याओं–चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और उनसे जूझते हुए अपनी राह खुद बनानी पड़ती है। ऐसी स्थिति में प्रतिभा–संपन्न अनुवादक स्रोत तथा लक्ष्य भाषा पर अपने अधिकार, विषय ज्ञान और सांस्कृतिक बोध आधारित अपनी योग्यता–सामर्थ्य के बल पर इन समस्याओं–चुनौतियों का सामना करते हुए विभिन्न युक्तियाँ अपनाकर मूल भाषा सामग्री की लक्ष्य भाषा सामग्री के रूप में 'समतुल्यता' बनाने का प्रयास करता है। अनुवाद कर्म के मार्ग पर चलते हुए मार्ग की बाधाओं रूपी काँटों को दूर करते हुए बनाई जाने वाली राह को 'अनुवाद की प्रविधियाँ' कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि यह कोई एक राह नहीं होती। अपने विवेक और आवश्यकता के अनुसार, अनुवादक अलग–अलग तरह की राहें अपनाते हुए बाधाओं से पार पाने की कोशिश करता है। उन राहों से गुजरते हुए वह स्रोत भाषा पाठ की बाधाओं को पार करते हुए लक्ष्य भाषा पाठ के रूप में अनूदित पाठ तैयार करता है। अनुवादक की यह राह 'अनुवाद की प्रविधियाँ' हैं, जिसके लिए

'अनुवाद के उपाय' (Measures of Translation), 'अनुवाद की रणनीतियाँ/अनुवाद की व्यूह–विधियाँ/अनुवाद की युक्तियाँ' (Strategies of Translation),' 'अनुवाद की विधियाँ' (Methods of Translation), 'अनुवाद की क्रियाविधियाँ' (Procedures of Translation) आदि शब्द भी प्रयुक्त किए जाते हैं। इस इकाई में हम 'Strategies of Translation' के संदर्भ में 'अनुवाद की प्रविधियाँ' शब्द को प्रयुक्त कर रहे हैं।

'प्रविधि' शब्द की व्युत्पत्ति 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'विधि' शब्द से हुई है। यह शब्द संस्कृत के इस शब्द का अर्थ है – प्रकृष्ट विधि। हिंदी कोश में इसका अर्थ 'कोई (कलात्मक) कार्य करने का विशेष ढंग, विशेष विधि या विशेष कौशल' बताया गया है। इसी प्रकार, आचार्य रामचंद्र वर्मा के 'प्रामाणिक हिंदी कोश' के अनुसार, प्रविधि का अर्थ है – 'किसी विशेष विषय से संबंध रखने वाली या किसी विशेष प्रकार की विधि, जैसे साक्ष्य प्रविधि, दूसरा अर्थ दिया है – तकनीक। 'प्रविधि' शब्द के इन अर्थों को यदि हम अनुवाद करने की विधि के संदर्भ में देखें तो इसका अर्थ उस विशिष्ट विधि या तकनीक से लिया जा सकता है, जिसे अनुवादक, अनुवाद करने के दौरान व्यवहार में लाता है।

इसी प्रकार यदि 'युक्ति' शब्द पर विचार करें तो कहा जा सकता है कि यह 'उचित विचार, कौशल, चातुर्य, उपाय, योजना, रीति' है। अनुवाद के संदर्भ में इन सभी अर्थों को लागू होते हुए देखा जा सकता है। वहीं, 'रणनीति' शब्द अपने कोशगत अर्थ में 'आक्रमण करने, युद्ध चलाने तथा सेना का व्यूहन करने आदि का ढंग या नैपुण्य' को व्यक्त करने वाला शब्द है। इस अर्थ को अनुवाद पर लागू करते हुए देखें तो 'अनुवाद कार्य को निपुणता के साथ संपन्न करने की विधि अथवा उपाय 'अनुवाद की युक्ति' कहलाता है।

वास्तव में कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि 'अनुवाद कर्म का ढंग, नैपुण्य, उपाय, योजना या रीति जिसे अनुवाद करते समय व्यवहार में लाया जाता है, 'अनुवाद की प्रविधियाँ' कहलाती हैं।

2.3 अनुवाद में विभिन्न प्रविधियाँ अपनाने की आवश्यकता क्यों?

अनुवाद के संदर्भ में आम तौर पर यही माना जाता है कि यह किसी एक भाषा में व्यक्त भाव–संवेदना अथवा कथ्य को दूसरी भाषा में अंतरित करना है। इस तरह, यह दो भाषाओं के बीच संपन्न होने वाली व्यावहारिक गतिविधि है। किसी भी व्यवहारोन्मुख कार्य को कुशलता से पूरा करने के लिए कोई योजना बनानी पड़ती है अथवा उसे किसी निश्चित प्रविधि को अपनाकर संपन्न किया जाता है। अनुवाद व्यावहारिक गतिविधि तो है, लेकिन यह 'कठोर कौशल' (hard skill) न होकर 'मृदु कौशल' (soft skill) माना जाता है। इस मृदु कोशल के द्वारा कार्य–निष्पादन करने के लिए किसी न किसी व्यवस्था (mechanism) की आवश्यकता होती है, किसी निश्चित कार्य–पद्धति को अपनाना पड़ता है ताकि वह कार्य भली प्रकार से पूरा किया जा सके। अनुवाद को बेहतर तरीके से पूर्णता तक पहुँचाने के लिए अनुवादक द्वारा निर्धारित की जाने वाली अथवा अपनाने वाली 'कार्य–पद्धति' को अनुवाद अध्ययन में 'अनुवाद की प्रविधि' (Procedures of Translation) कहा जाता है।

चूँकि किसी भी प्रविधि को स्थिति–परिस्थिति विशेष (given situation) के संदर्भ में अपनाया जाता है, इसलिए यह व्यवस्थित दृष्टि की द्योतक होती है। खास बात यह भी रहती है कि स्थिति–परिस्थिति के बदलने पर अपनाई जा रही प्रविधि भी बदलनी पड़ती

है। इसलिए प्रविधि, सूक्ष्म संदर्भ लिए हुए होती है। दुश्मन देश के साथ युद्ध (war) की स्थिति में, इसे रण–क्षेत्र में विशेष तौर पर लागू होते हुए देखा जाता है। तात्विक दृष्टि से 'स्ट्रेटजी' शब्द युद्ध–नीति का संदर्भ लिए हुए है, इसलिए 'प्रविधि' (stratergy) के लिए 'रणनीति' पर्याय को भी व्यवहार में लाया जाता है। इसके अलावा, कोरोना जैसी महामारी की स्थिति हो या फिर किसी भी अन्य प्रकार की कोई समस्या अथवा चुनौती हो, उसका सामना करने के दौरान परिस्थिति के अनुकूल कार्य को निष्पादित करने के लिए नीति (अर्थात कार्यनीति=strategy) अपनानी पड़ती है। प्रविधि के संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि एक बार अपनाई गई प्रविधि मात्र को ही व्यवहार में नहीं लाया जाता; स्थिति–परिस्थिति को देखते हुए उसमें संशोधन–परिवर्धन अथवा बदलाव किया जाता है और किए जाने वाले कार्य को पूरा किया जाता है। अनुवाद में विभिन्न प्रविधियाँ अपनाने की आवश्यकता को भी इसी संदर्भ में देखा जा सकता है।

असल में अनुवाद करने की प्रक्रिया में अनुवादक एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में कौशल के साथ अंतरित करता है। अंतरण की इस प्रक्रिया में वह भाषा, भाव, शैली और पाठपरक समतुल्यता को बनाए रखते हुए चलता है। अनुवादक अपने अनुभव और प्रतिभा–कौशल के बल के आधार पर दो भाषाओं – स्रोत और लक्ष्य भाषा – संबंधी अपनी भाषा–दक्षता, विषय–ज्ञान एवं सांस्कृतिक बोध की सहायता से अनुवाद के दौरान मूल से 'समतुल्यता' बनाने का प्रयास करता है। इस कार्य में वह आवश्यकता एवं विवेक के अनुसार विभिन्न प्रकार के कोशों आदि जैसे अनुवादकीय साधन–उपकरणों का प्रयोग भी करता है। लेकिन, अनुवाद कार्य के दौरान उसे दोनों भाषाओं की संरचना, प्रकृति, व्याकरण, शब्द संयोजक पर्याय, शैलीगत अंतर, सामाजिक–सांस्कृतिक तत्व आदि संबंधी कई प्रकार की समस्याओं–सीमाओं का सामना भी करना पड़ता है। कभी–कभी तो ऐसा भी हो जाता है कि उसके समक्ष अननुवाद्यता (untransability) की स्थिति तक बन जाती है। लेकिन, स्रोत भाषा के सभी शब्द अथवा अभिव्यक्तियाँ न तो पूरी तरह से अनूद्य (अनुवाद योग्य) होती हैं और न ही पूरी तरह से अननूद्य (अनुवाद न किए जाने योग्य)। इसकी असीम सीमा ही अनुवादक के समक्ष अननुवाद्यता की स्थिति बना देती है। इस कारण अनुवादक को अलग–अलग प्रविधियाँ अपनाने की आवश्यकता पड़ती है।

इसके अलावा, यह भी ध्यान रखने योग्य है कि अनुवाद की मानव–जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्ति है। लेकिन, प्रत्येक क्षेत्र का अपना वैशिष्ट्य है। जैसे प्रशासन का क्षेत्र, शिक्षा के क्षेत्र से भिन्न है। इसी प्रकार, मीडिया का क्षेत्र, सृजनात्मक साहित्य से भिन्नता लिए हुए है या फिर बैंक का क्षेत्र ही देखें तो वह 'विधि' (लॉ) से भिन्न है। विशेष यह भी है कि प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है और उसका भाषा–प्रयुक्ति क्षेत्र भी भिन्न होता है। कभी–कभी तो ऐसा भी देखा जाता है कि भाषा में प्रयुक्त होने वाला कोई शब्द–विशेष अलग–अलग क्षेत्रों के संदर्भ में अलग–अलग अर्थ को व्यक्त करता है। जैसे, अंग्रेजी का 'net' शब्द प्रशासन और बैंकिंग जगत में 'निवल' एवं 'शुद्ध' अर्थ को व्यक्त करता है तो सामान्य संदर्भों में यह शब्द 'जाल' के अर्थ का व्यंजक है। इसी प्रकार, 'interest' शब्द को देखा जा सकता है जो अलग–अलग विषय–क्षेत्रों और संदर्भों में 'ब्याज', 'हित' और 'रुचि' अर्थ का सूचक है। इसलिए भी यह स्वीकार किया जाता है कि अनुवाद की क्षेत्रगत भिन्नता, अनुवादक को अलग–अलग प्रविधि अपनाने को बाध्य करती है।

अनुवादक के समक्ष उभरकर सामने आई विभिन्न प्रकार की समस्याओं–चुनौतियों, सीमाओं

और अननुवाद्यता और क्षेत्रगत भिन्नता की स्थिति में अनुवादक जिस कार्य–पद्धति को अपनाते हुए आगे बढ़ने की प्रक्रिया में सबसे पहले लक्ष्य भाषा के समतुल्य पर्याय खोजने की कोशिश करता है। हालाँकि यह सही है कि अनुवादक को हमेशा दोनों भाषाओं में एक समान अभिव्यक्तियाँ नहीं मिलतीं। अगर मिलने की संभावना होती तो समस्याएँ क्यों उठ खड़ी होतीं, अनुवाद की सीमाओं की या अननुवाद्यता की स्थिति ही क्यों बनती। लेकिन, फिर भी, खोज करने पर कुछ हासिल होने की संभावना बन सकती है। उदाहरण के लिए, 'Adam and Eve', 'Herculean effort', 'Lucifer', 'Cupid', 'Pluto/Minos', 'Lute/Orpheus', 'jupiter', 'deity', 'demons', 'mendicant' आदि शब्दों–अभिव्यक्तियों के लिए क्रमशः 'आदम और हव्वा', 'भगीरथ प्रयास', 'यमराज', 'कामदेव', 'यम' और 'नारद', 'इंद्र', 'देवता', 'असुर/दानव' और 'भिक्षुक' शब्द प्रयुक्त कर लेना।

अनुवादक के इसी प्रकार के प्रयास को वाक्यों के अनुवाद के संदर्भ में भी उदाहरण के लिए देखा जा सकता है। जैसे, परंपरागत हिंदी व्याकरण में तीन प्रकार के वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य) हैं और अंग्रेजी में केवल प्रथम दो प्रकार के। इसलिए भाववाच्य वाली सामग्री अंग्रेजी में अनुवाद की सीमा या अननुवाद्यता की स्थिति बन जाती है। तब अनुवादक को मूल संदर्भ को ध्यान में रखते हुए उसके अनुसार अलग–अलग प्रकार से वाक्यों का प्रयोग करना पड़ता है। जैसे, 'चट्टानी क्षेत्रों में ऐसे नहीं दौड़ा जाता।' – 'This is not the way to run in rocky areas.' या फिर, 'मुझसे और पिज्जा नहीं खाया जाता।' – 'I can't eat any more pizza.' तात्पर्य यह है कि अनुवाद कार्य की दिशा में आगे बढ़ते हुए और इस तरह की चुनौतियों का सामना करते हुए अनुवादक को तरह–तरह के उपाय अपनाने पड़ते हैं, जिन्हें अनुवाद चिंतन जगत में 'अनुवाद की प्रविधियाँ' का नाम दे दिया जाता है।

अनुवादक, मूल पाठ की प्रकृति, अनुवाद के उद्देश्य और लक्षित वर्ग की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए, अपने विवेक के अनुसार विभिन्न प्रकार की प्रविधियों या उनमें से सर्वोपयुक्त युक्ति का आधार लेकर अनुवाद कर्म में प्रवृत्त होता है। उसका मूल लक्ष्य तो अनूदित पाठ को संप्रेष्य बनाना होता है ताकि वह लक्षित वर्ग को सहज रूप से पठनीय हो, स्वीकार्य हो। इसीलिए अनुवादक को अनुवाद के लिए विभिन्न प्रकार की युक्तियाँ अपनानी पड़ती हैं।

यहाँ प्रश्न उठता है कि अनुवाद की विभिन्न प्रविधियाँ कौन–सी हैं? अनुवादक किस स्थिति या किसी प्रकार की सामग्री का अनुवाद करते समय कौन–सी प्रविधि को अपनाए? इन पक्षों पर विचार करना जरूरी है। इसलिए, पहले हम अनुवाद की प्रविधियों के संदर्भ में विभिन्न अनुवाद चिंतकों के द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को देखते हैं।

2.4 अनुवाद की प्रविधियों के प्रकार

अनुवाद चिंतन जगत या कहें कि अनुवाद अध्ययन विषय के कुछ अध्येताओं ने निपुणता से अनुवाद करने की प्रक्रिया के दौरान अनुभव की गई समस्याओं या चुनौतियों से निपटने के लिए बहुत से तरीके अपनाने की जरूरत को रेखांकित किया है। इस आधार पर उन्होंने अनुवाद की कुछ रणनीतियों का उल्लेख किया है। वे यह उल्लेख करते हैं कि अनुवाद किस प्रकार किया जाता है या फिर उन सामान्य मानदंडों को प्रस्तुत करते हैं, जो अनुवाद की प्रक्रिया से गुजरने के दौरान मस्तिष्क में उत्पन्न होते हैं। आइए, उनमें से प्रमुख विद्वानों के मतों को जानें।

2.4.1 अनुवाद की प्रविधियों के प्रकार : विद्वानों के अभिमत

अनुवाद की विभिन्न इन प्रविधियों पर विचार करने वाले विद्वानों में जीन पॉल विनय और जॉन डर्बलनेट, आंद्रे लेफेवेयर, हिलेरी ब्लॉक और लॉरेंस वेनुटी का नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद पांडेय ने 'रिविज़िटिंग स्ट्रेटजीज़ ऑफ ट्रांसलेशन' शीर्षक अपने शोध–आलेख में इन अनुवाद चिंतकों के विचारों के आलोक में अनुवाद की युक्तियों पर चर्चा की है। इसका हिंदी अनुवाद भारतीय अनुवाद परिषद की पत्रिका 'अनुवाद' के अंक 166 में 'अनुवाद की युक्तियाँ : एक पुनर्विचार' (अनु. डॉ. हरीश कुमार सेठी) शीर्षक से प्रकाशित है। वैसे, देखा जाए तो विभिन्न अनुवाद चिंतकों ने या तो किसी भी प्रकार के साहित्य (ज्ञानात्मक और सृजनात्मक साहित्य) के अनुवाद की प्रक्रिया में या फिर कहानी–कविता आदि विधा–विशेष की विभिन्न अनुवाद पद्धतियों के आधार पर 'अनुवाद की युक्तियों' पर विचार किया है।

(क) जीन पॉल विनय और जॉन डर्बलनेट के विचार : अनुवाद की युक्तियों के प्रकारों के संदर्भ में सर्वप्रथम जीन पॉल विनय और जॉन डर्बलनेट का नाम लिया जा सकता है। कनाडा के दो भाषाविद – जीन पॉल विनय; और जॉन डर्बलनेट ने भाषावैज्ञानिक संदर्भ में 'ए मेथ्डोलॉजी फॉर ट्रांसलेशन' शीर्षक से 1958 में लिखे निबंध में युक्तियों (स्ट्रेटजीज़) को 'विधियाँ' (मैथ्ड्स) कहा है। इस निबंध में उन्होंने अनुवाद की विधियों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है। ये विधियाँ हैं – प्रत्यक्ष अनुवाद (direct translation); और परोक्ष अनुवाद (oblique translation)। लेखक–द्वय द्वारा प्रस्तुत अनुवाद की ये दोनों युक्तियाँ सरसरी तौर पर शब्दशः (literal) और स्वच्छंद (free) अनुवाद का भ्रम पैदा करती हैं। जबकि यह विभाजन अपेक्षाकृत जटिल और क्रमबद्ध है।

अनुवाद की विधियों को वर्गीकृत करते हुए विनय और डर्बलनेट ने 'प्रत्यक्ष अनुवाद' और 'परोक्ष अनुवाद' का विवेचन भी किया है। इस संदर्भ में वे पहले स्रोत भाषा संदेश को लक्ष्य भाषा में तत्वतः रूपांतरित करने की संभावना पर चर्चा करते हैं। उनकी चर्चा यह संकेत करती है कि जब अनुवादक मूल के संदेश को लक्ष्य भाषा में अंतरित करता है तो वह 'प्रत्यक्ष अनुवाद' है क्योंकि इस प्रक्रिया में अनुवादक स्रोत भाषा की संरचनात्मक सादृश्यता अथवा समांतरता से संबंधित आयामों के आलोक में उन्हें लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की दिशा में प्रवृत्त होता है। वे बताते हैं कि संदेश को अंतरित करने की प्रक्रिया के दौरान आम तौर पर अनुवादक लक्ष्य भाषा में अंतरालों को भर नहीं पाता है। ऐसे में वह समांतर अवधारणाओं को अंतरित करने की समस्या का समाधान करने के लिए 'परोक्ष अनुवाद' की विधि को व्यवहार में लाता है।

अपने इस निबंध में विनय और डर्बलनेट ने अनुवाद की युक्तियों को 'क्रियाविधियाँ' (प्रोसीजर्स) कहा है और इसके अंतर्गत सात युक्तियाँ बताई हैं। ये क्रियाविधियाँ हैं – (1) 'अंगीकरण' (borrowing), (2) काल्क (Calque) (3) शब्दानुवाद अथवा 'शाब्दिक अनुवाद' (literal translation) (4) प्रतिस्थापन (Transposition) (5) अर्थ के रूप का परिवर्तन से संबंधित 'परिसीमन' (modulation) (6) 'समतुल्यता' (equivalance); और (7) 'अनुकूलन' (adaptation)। इनमें से पहली तीन क्रियाविधियाँ 'प्रत्यक्ष अनुवाद' से संबंधित है और शेष चार 'परोक्ष अनुवाद' से।

विनय और डर्बलनेट आदि द्वारा बताई गई अनुवाद की प्रविधियाँ किसी भी प्रकार की सामग्री के अनुवाद के संदर्भ में लागू होती देखी जा सकती हैं। जैसे, उनके विचार

साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद के संदर्भ में तो उपयोगी हैं ही, ज्ञानात्मक एवं कार्यालयी साहित्य के अनुवाद की दृष्टि से भी सार्थक हैं।

(ख) आंद्रे लेफेवेयर के विचार : आंद्रे लेफेवेयर ने अनुवाद की युक्तियों के बारे में 'ट्रांसलेटिंग पोइट्री : सेवन स्ट्रेटजीज़ एंड ए ब्लू प्रिंट' शीर्षक से 1975 में लिखे अपने निबंध में विचार व्यक्त किए। उन्होंने इन युक्तियों का उल्लेख कैटेलस की 'पोएम 64' के अंग्रेजी अनुवादकों के द्वारा अनुवाद के दौरान अपनाई गई विभिन्न पद्धतियों के आधार पर किया। अपने इस निबंध में उन्होंने अनुवाद की जिन सात युक्तियाँ का उल्लेख किया है, वे हैं – (1) स्वनिमिक (Phonemic) अथवा ध्वनिगत अनुवाद (2) शाब्दिक अनुवाद अथवा शब्दानुवाद (Literal Translation) (3) छंदबद्ध (Metrical) अनुवाद (4) पद्य का गद्य (Poetry into Prose) में अनुवाद (5) लयबद्ध (Rhymed) अनुवाद (6) छंदमुक्त (blank-verse) अनुवाद; और (7) निर्वचन (Interpretation)।

स्पष्ट है कि आंद्रे लेफेवेयर द्वारा प्रस्तावित ये पद्धतियाँ काव्यानुवाद के संदर्भ में बताई गई हैं। जैसे छंदबद्ध अथवा छंदमुक्त अनुवाद या फिर कविता का गद्य में अनुवाद। इसलिए लेफेवेयर की युक्तियों को कविताओं का अनुवाद करते समय अपनाया जा सकता है।

(ग) हिलेरी ब्लॉक के विचार : हिलेरी बेलॉक ने 1931 में लिखी अपनी पुस्तक 'ऑन ट्रांसलेशन' में अनुवाद की युक्तियों के बारे में विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने, गद्य साहित्य के अंतरण के संदर्भ में छह सामान्य सिद्धांतों की चर्चा की है। ये सिद्धांत हैं – (1) शब्द अथवा वाक्य के स्थान पर पूरे पाठ को एक अखंडित इकाई समझना और अनुच्छेदों में अनुवाद करना (2) मुहावरों का मुहावरों में अनुवाद करना (3) भाषा–शैली का ध्यान रखते हुए 'आशय–प्रति–आशय' (Intention by Intention) अनुवाद (4) 'les faux amis' (ला फॉक्स अमिस) अर्थात अनुवादक के भ्रामक मित्रों (false friends) से बचना। (5) 'तत्वांतरण' (trans-mutation); और (6) मूल को अलंकृत (embellish) नहीं करना और 'अनुवादक की दृश्यता' (visibility of translator) से बचना।

(घ) लॉरेंस वेनुटी के विचार : लॉरेंस वेनुटी ने स्रोत और लक्ष्य भाषा के पाठकों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अनुवाद की युक्तियों को अपने चिंतन में शामिल किया। 1995 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'ट्रांसलेटर्स इनविज़िबिलिटी : ए हिस्ट्री ऑफ ट्रांसलेशन' में वेनुटी ने अनुवादक की दृश्यता का समर्थन करते हुए अनुवाद की दो प्रमुख युक्तियों का उल्लेख किया है। ये युक्तियाँ हैं – (1) घरेलूकरण (Domestication); और (2) विदेशीकरण (Foreignization)। विदेशी पाठ की भाषापरक एवं सांस्कृतिक भिन्नताओं का देशीकरण करने (स्थानीय रूप देने) के स्थान पर उन्हें यथावत लक्ष्य भाषी पाठक तक पहुँचाना 'विदेशीकरण' है। वहीं, अनुवाद करते समय सामग्री को अगर अनुवादक लक्ष्य भाषा–भाषियों के संदर्भ में पर ध्यान केंद्रित रखता है तो वह 'घरेलूकरण' होगा। वैसे, अनुवाद की ये दोनों ही युक्तियाँ भाषिक मुद्दों के स्थान पर सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दों से ज्यादा संबंधित हैं। इसके अलावा, यह भी वास्तविकता है कि इन युक्तियों को साहित्यिक कृतियों के अनुवाद या फिर सांस्कृतिक अनुवाद के संदर्भ में तो लागू किया जा सकता है, लेकिन साहित्येतर अनुवाद और ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद पर ये लागू नहीं की जा सकतीं।

2.4.2 विद्वानों के मतों का आलोचनात्मक विवेचन

अनुवाद चिंतन जगत के कतिपय विद्वानों के द्वारा व्यक्त इन विविध विचारों से हमें 'अनुवाद की विभिन्न प्रविधियाँ' का पता चलता है। इस संदर्भ में ध्यान देने की बात यह है कि कुछ प्रविधियाँ सामान्य प्रकृति की हैं और कुछ विशिष्ट। कहने का अर्थ यह है कि कुछ प्रविधियाँ ऐसी हैं जिन्हें किसी भी प्रकार की सामग्री का अनुवाद करते समय अनुवादक व्यवहार में लाता है, जबकि किसी ज्ञान या क्षेत्र विशेष से संबंधित विशिष्ट प्रकार की सामग्री का अनुवाद करते समय विशिष्ट प्रविधियों को प्रयुक्त करता है। इस आधार पर, कहा जा सकता है कि कुछ प्रविधियाँ 'कार्यालयी साहित्य', 'विधि साहित्य' या फिर किसी भी प्रकार के 'ज्ञानात्मक साहित्य' का अनुवाद करते समय अपनाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं और कुछ 'सृजनात्मक साहित्य' और उसमें भी विशेष तौर पर 'काव्यानुवाद' के संदर्भ में विशेष उपयोगी हैं।

इसके अलावा 'समतुल्यता' का भी प्रविधि के रूप में उल्लेख मिलता है। जबकि वास्तविकता यह भी है कि 'समतुल्यता' केवल अनुवाद की प्रविधि मात्र नहीं है – अनुवादक, अनुवाद करते समय अनूदित सामग्री में समग्र रूप से समतुल्यता स्थापित करने का ध्येय रखकर चलता है। अगर हम 'समतुल्यता' को प्रविधि मानकर चलें तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह वह तकनीक या विधि है जो अनुवादक को उसका ध्येय प्राप्त करने में सहायक होती है।

इसी प्रकार, 'छंदानुवाद', 'छंदमुक्त अनुवाद', 'तुकांत अनुवाद', 'विधांतरण', 'निर्वचन' और 'अनुसृजन' आदि अनुवाद के प्रकार हैं, प्रविधि नहीं। इसी प्रकार, तात्विक दृष्टि से यह भी कहा जा सकता है कि वेनुटी के द्वारा बताई गई दो प्रविधियों में से 'विदेशीकरण', भाषा के स्तर पर 'अंगीकरण' की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है और 'घरेलूकरण' का संबंध 'अनुकूलन' से है। अनुवाद करते समय स्रोत भाषा पाठ का देश–काल और परिवेश के संदर्भ में घरेलूकरण करना अनुवाद की विधा अथवा प्रकार के रूप लिए हुए होता है। उस स्थिति में अनुकूलन, समग्र स्रोत पाठ पर लागू होता है। वैसे भी उनके द्वारा सुझाई गई अनुवाद की ये प्रविधियाँ भाषिक मुद्दों के स्थान पर सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दों से ज्यादा संबंधित हैं और इन्हें साहित्यिक कृतियों के अनुवाद या फिर सांस्कृतिक अनुवाद के संदर्भ में तो लागू किया जा सकता है, लेकिन साहित्येतर अनुवाद और ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद पर नहीं। वैसे, जब हम शब्दों अथवा अभिव्यक्ति के स्तर पर देखते हैं तो अनुकूलन अनुवाद एक प्रभावी प्रविधि नजर आती है, न कि समग्र पाठ के संदर्भ में।

वहीं विनय और डर्बलनेट द्वारा बताई गई 'काल्क' प्रविधि पर विचार करें तो यह पाते हैं यह मूलतः शब्दानुवाद से संबंधित प्रविधि है। और, आंद्रे लेफेवेयर ने काव्यानुवाद के संदर्भ में अनुवाद की प्रविधियों का उल्लेख किया है। वहीं, अगर हम हेनरी ब्लॉक के द्वारा अनुवाद की प्रविधि के संदर्भ में 'les faux amis' (ला फॉक्स अमिस) अर्थात अनुवादक के नकली मित्रों (false friends) से बचने की प्रविधि की बात करते हैं तो वह भी शब्दानुवाद के समय बरती जाने वाली सावधानी से जुड़ा हुआ पक्ष नजर आता है। इसलिए, अनुवाद की विदेशीकरण, घरेलूकरण, काल्क और अनुवादक के नकली मित्रों से बचना जैसी प्रविधियों को इन संदर्भों में शामिल किया जा सकता है। वैसे, इन पर संबंधित प्रविधि–विशेष पर चर्चा करते समय, आगे इस इकाई में से प्रत्येक भी विचार किया जाएगा।

कुल मिलाकर, अब तक की गई चर्चा के आधार पर और अनुवाद के दौरान अनुवादकों के द्वारा अपनाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की प्रविधियों ध्यान में रखते हुए कुछ सामान्य प्रविधियाँ प्रस्तावित की जा सकती हैं, जिन्हें कमोबेश सभी प्रकार के साहित्य का अनुवाद करने के संदर्भ में आवश्यकता के अनुसार लागू किया जा सकता है। ये प्रविधियाँ हैं :

(i) अंगीकरण (Borrowing/Adoptation)

(ii) अनुकूलन (Adaptation/Calque)

(iii) शाब्दिक अनुवाद (Word for word translation)

(iv) भावानुवाद (Paraphrase)

(v) प्रतिस्थापन (Substitution)

(vi) परित्याग (Deletion); और

(vii) अनुवादकीय टिप्पणी (Translator's Note or Complementation)

आइए, अनुवाद की इन विभिन्न प्रविधियों पर उपयुक्त उदाहरणों के साथ विस्तार से चर्चा करें।

2.5 अनुवाद की विभिन्न प्रविधियाँ

अब तक की गई चर्चा से यह स्पष्ट है कि अनुवाद करने की प्रक्रिया में अनुवादक जब विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करता है तो उनसे पार पाने के लिए वह अनूद्य सामग्री की प्रकृति, भाषा और संस्कृति के संदर्भ में आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार की प्रविधियों को व्यवहार में लाता है। विभिन्न अनुवाद–चिंतकों ने अपने–अपने चिंतन और अनुभव के आधार पर अनुवाद की जो सामान्य प्रविधियाँ बताई हैं, उन पर इकाई के पिछले भाग में चर्चा की जा चुकी है और उस चर्चा के आधार पर कुछ प्रविधियाँ सुझाई गई हैं। आइए, सबसे पहले 'अंगीकरण' प्रविधि पर विचार करें।

2.5.1 अंगीकरण (Adoptation/Borrowing)

किसी अज्ञात या नई अवधारणा आदि के लिए मूल पाठ में प्रयुक्त शब्द का अनुवाद करते समय 'अंगीकरण' विधि को अपनाया जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि अनुवादक, इस प्रविधि को अपनाते हुए स्रोत भाषा के अननुवाद्य शब्द अथवा अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा में बिना किसी संशोधन के यथावत ग्रहण करके अनूदित पाठ में स्थान दे सकता है। यह युक्ति, दूसरी भाषा के शब्द को अपनी भाषा में अंगीकृत करने से संबंधित है। अनुवाद की समस्या या चुनौती के एक समाधान के रूप में यह सर्वाधिक सरल विधि मानी जाती है। अनूद्य पाठ की लक्ष्य भाषा में शैलीपरक समतुल्यता को बनाए रखने या बढ़ाने की दृष्टि से इस तकनीक का अपना विशेष महत्व है।

जब किसी दूसरी भाषा के शब्द अंगीकृत करते हुए ज्यों के त्यों स्वीकार कर लिए जाते हैं वे लक्ष्य भाषा में व्यवहार में आने लग जाते हैं, उसका अंग बन जाते हैं। अंग्रेजी के 'pub', 'club', 'sandwitch', 'radio jockey', 'beautician', 'cake', 'mango shake' आदि असंख्य शब्द मिलते हैं जो हिंदी में अनुवाद की सीमा से बाहर हैं। इन्हें हिंदी में

लिप्यंतरित रूप में क्रमशः 'पब', 'क्लब', 'सैंडविच', 'रेडियो जॉकी', 'ब्यूटीशियन', 'केक' और 'मैंगो शेक' लिखना वास्तव में शब्द को यथावत ग्रहण करना के उदाहरण हैं।

स्रोत भाषा के शब्द अथवा अभिव्यक्ति आदि को लक्ष्य भाषा में अंगीकृत करके उनके मूल रूपतत्व को लक्ष्य भाषा के प्रयोक्ताओं तक पहुँचाने का भाव निहित है। अनुवाद करने की प्रक्रिया में आम तौर पर व्यवहार में लाई जाने वाली अंगीकरण की यह युक्ति 'अनुवाद में विदेशीकरण' (Foreignisation in Translation) की अवधारणा के रूप में भी प्रतिष्ठित है। पाश्चात्य अनुवाद चिंतक लॉरेंस वेनुटी ने 'विदेशीकरण' की इस अवधारणा को प्रस्तुत किया था। वेनुटी ने इसे स्रोत भाषा पाठ के विदेशीपन को लक्ष्य भाषा में बनाए रखने की युक्ति माना। इसका अर्थ यह है कि 'मूल पाठ के कथ्य, सूचना या तथ्य को लक्ष्य भाषा पाठ में समतुल्य स्तर पर प्रस्तुत करने के स्थान पर स्रोत भाषा संस्कृति के सदृश्य यथावत बनाए रखा जाता है ताकि मूल संस्कृति की महक लक्ष्य भाषा पाठ में बनी रहे।' 'डिक्शनरी ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज़' के अनुसार मूल भाषा पाठ के विदेशीपन को लक्ष्य भाषा पाठ में बनाए रखना 'विदेशीकरण' है – 'foreignisation means a target text is produced which deliberately breaks target conventions by retaining something of the foreignness of the original.' (p.59)

वास्तविकता यह है कि शाब्दिक धरातल पर अलग–अलग शब्द होने के बावजूद, 'अंगीकरण' और 'विदेशीकरण' एक ही अर्थ के द्योतक हैं। अंगीकरण, किसी दूसरी भाषा के शब्द को अपनी भाषा में अंगीकृत करने या ज्यों के त्यों अपनाना है और विदेशीकरण भी मूल पाठ के कथ्य, सूचना या तथ्य को लक्ष्य भाषा पाठ में यथावत बनाए रखना है। स्पष्ट है कि इस प्रविधि में लक्ष्य भाषा के स्तर पर समतुल्य प्रस्तुति को महत्व नहीं दिया जाता है। इसके स्थान पर, इसमें मूल पाठ के शब्द, कथ्य, सूचना अथवा तथ्य को दूसरी भाषा में अपने मूल रूप में ही अपनाना है।

स्रोत भाषा की विशिष्टता को लक्ष्य भाषा में बनाए रखने की दृष्टि से 'अंगीकरण' की प्रविधि आम तौर पर व्यवहार में लाई जाती है। इस तरह गृहीत शब्द लक्ष्य भाषा में अपने साथ शाब्दिक और सांस्कृतिक अर्थ–संदर्भ लेकर आते हैं। लक्ष्य भाषा में ज्यों के त्यों स्वीकृत शब्द लक्ष्य भाषा में शुरू में तो अटपटे लगते हैं, लेकिन धीरे–धीरे प्रचलित हो जाने पर वे मुक्त भाव से प्रयुक्त होने लगते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि इससे स्रोत भाषा संस्कृति का लक्ष्य भाषा की संस्कृति में स्थानीयकरण (localization) हो जाता है। अंग्रेजी के 'dating', 'valentine day', 'live-in relation' आदि ऐसे ही शब्द हैं, जो अब हिंदी में धीरे–धीरे अपना अस्तित्व बनाते जा रहे हैं। इसी तरह से पश्चिमी जगत के नृत्य–रूप को व्यक्त करने वाले 'salsa', 'rumba', 'samba', 'jazz', 'paso doble', 'tab dance', 'balle', 'jive' आदि भी मूलतः इसी प्रकार के शब्द ही हैं, जो अपना परिचय क्षेत्र विस्तृत करते जा रहे हैं। इस प्रविधि के जरिए अनुवादक स्रोत भाषा संस्कृति के तत्वों को लक्ष्य भाषा पाठ में परिचित कराता है।

इस प्रकार के शब्द अपने अंगीकृत रूप में लक्ष्य भाषा में इतने अधिक व्यवहार में लाए जाने लग जाते हैं कि कालांतर में यह आभास तक नहीं हो पाता कि वे उस भाषा के अपने मूल शब्द नहीं हैं। आम तौर पर लक्ष्य भाषा में नई अवधारणाओं के परिचय/उपस्थिति के कारण शब्दों आदि के अंगीकरण की स्थिति बनती है। ऐसे में अनुवादक उन शब्दों को या तो यथावत लक्ष्य भाषा में ले लेता है या फिर भाषा की प्रकृति के अनुरूप उसका अनुकूलन या अनुवाद के जरिए उसे अपनाता है। इस प्रकार अपनाए गए शब्दों

का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय उसे पर्याप्त सावधानी बरतनी चाहिए और ऐसा न हो कि उसके द्वारा अनूदित शब्द लक्ष्य भाषा में 'भ्रामक मित्र' (false friends) सिद्ध हों।

हिंदी में अंगीकृत रूप में अपना अस्तित्व बना रहे अंग्रेजी के 'डेटिंग', 'लिव–इन रिलेशन' आदि जैसे उपर्युक्त उदाहरण अंग्रेजी और अन्य यूरोपीय भाषा–समाज से अभी कुछ समय पूर्व ही लिए गए हैं। हिंदी में शब्दों को यथावत ग्रहण करने की प्रवृत्ति पहले से चली आ रही है। उदाहरण के लिए, आज **तुर्की** भाषा के 'कुली', 'चाकू', 'गलीचा', 'लाश', 'कैंची', तोप, 'दरोगा' जैसे शब्द; **अरबी** भाषा से 'शहीद', 'शहादत', 'फरार', 'अदालत', 'साफ', 'दुनिया', 'नकद', 'तारीख', 'आदत', 'औरत', 'किताब', 'मुकदमा'; **फारसी** से 'आदमी', 'अमरूद', 'फौज', 'फौजी', 'आबादी', 'जलेबी', 'उम्मीदवार', 'फरियाद', 'पाजामा', 'मोजा', 'जमीन', 'दुकान''; **पुर्तगाली** से 'नीलाम', 'कनस्तर', 'अलमारी', 'गमला', 'तंबाकू', 'बाल्टी', 'तौलिया', 'मेज'; **फ्रांसीसी** से 'रेस्तराँ', 'कूपन', 'अंगरेज' और 'कार्तूस'; **डच** से 'तुरुप', 'बम', 'चिड़ी; **तिब्बती** से 'डाँडी'; **जापानी** से 'रिक्शा', 'सुदोकु' और **चीनी** भाषा के 'चाय' एवं 'लीची' आदि सैकड़ों–हजारों हिंदी में बहु–प्रचलित ऐसे शब्द हैं जो वास्तव में अन्य भाषाओं से यथावत ग्रहण किए हुए हैं। शब्दों को इस प्रकार यथावत गृहीत करने से भी भाषा का विकास होता है, भाषा की शब्द–संपदा समृद्ध एवं संम्पन्न होती है।

किसी भी विकासमान भाषा के द्वारा इस प्रकार शब्द ग्रहण करना कमोबेश प्रत्येक भाषा की सहज प्रवृत्ति–प्रकृति है। अंग्रेजी भाषा में भी शब्दों को यथावत ग्रहण करने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। अंग्रेजी में हिंदी भाषा से गृहीत इस प्रकार के कुछ शब्द हैं – Maya, Decoit, Yoga, Jungle, Chutney, Curry आदि। इसी प्रकार, अंग्रेजी में प्रचलित 'Brother' शब्द जर्मन से, 'Position' शब्द फ्रांसीसी से, 'Agile' शब्द इतालवी से और 'Admiral' शब्द अरबी भाषा से लिया गया है।

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया में अनुवाद की इस 'अंगीकरण' प्रविधि को पर्याप्त रूप से व्यवहार में लाया जाता है। सूचना–संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अतुलनीय विकास के कारण हिंदी शब्दावली जगत में 'कंप्यूटर', 'मॉनीटर', 'प्रिंटर', 'पेन ड्राइव', 'सॉफ्टवेयर', 'हार्डवेयर', 'मदर बोर्ड' आदि अनेकानेक शब्द हिंदी में अंगीकृत तौर पर प्रयोग में लाए जाते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि शब्दों को इस प्रकार यथावत गृहीत करने से भी भाषा का विकास होता है, भाषा की शब्द–संपदा समृद्ध एवं संपन्न होती है। इससे जहाँ भाषा में नए–नए शब्द जुड़ते हैं, वहीं उनकी सहायता से नए–नए शब्दों का निर्माण भी सहज हो जाता है। इसे हम उदाहरण की सहायता से समझ सकते हैं। इस संदर्भ में अंग्रेजी के व्यवहृत 'registry/registration', 'computer', 'share', 'gurantee', 'appelle', 'rail' आदि शब्दों को देखा जा सकता है। इनकी सहायता से बने 'रजिस्ट्रीकरण' (रजिस्ट्री+करण), 'कंप्यूटरीकरण' (कंप्यूटर+करण), 'शेयर धारक' (शेयर+धारक), 'गारंटीकर्ता' (गारंटी+कर्ता), 'अपीलकर्ता' (अपील+कर्ता), 'रेलगाड़ी' (रेल+गाड़ी) आदि शब्द हिंदी के प्रत्यय आदि लगाकर निर्मित हुए शब्द हैं। इसी संदर्भ में अंग्रेजी के 'voltage' शब्द के लिए हिंदी में प्रयुक्त 'वोल्टता' शब्द देखा जा सकता है जो 'वोल्ट' के साथ 'ता' प्रत्यय के योग से निर्मित किया गया है। वहीं 'कपड़ा मिल', 'लाठी–चार्ज', 'चीनी मिल' जैसे शब्द भी हैं जिनके अंत में अंग्रेजी के शब्द प्रयुक्त किए गए हैं। इसी प्रकार, अरबी–फारसी और तुर्की से गृहीत शब्दों से मिलकर बने शब्द ये भी देखे

जा सकते हैं – 'कटोर+दान', 'चमक+दार', 'पान+दान', 'कलम+बंद', 'गोता+खोर', 'फिजूल+खर्च', 'तोप+खाना', 'तोप+गाड़ी', 'खून+पसीना', 'गोता+खोर' आदि।

वैसे, इस प्रकार गृहीत शब्दावली को लक्ष्य भाषा में लिखने और उसे अपनी भाषा में प्रयुक्त करते समय मुख्य कठिनाई वर्तनी की आती है। जैसे, उच्चारण की दृष्टि से 'न्यूमोनिया', 'वाइटैमिन', 'मैशीन' आदि शब्द की वर्तनी में भिन्नता देखने में नजर आती है। इनके स्थान पर इनकी हिंदी में क्रमशः 'निमोनिया', 'विटामिन' और 'मशीन' के रूप में वर्तनी प्रचलित है। इसी प्रकार 'species' शब्द को 'स्पीशीज', 'स्पेशींज' तथा 'स्पीसीज' बोला और लिखा जाना भी वर्तनी संबंधी कठिनाई का द्योतक है। यही स्थिति 'Glucose' (ग्लूकोज़) जैसे शब्दों को लेकर भी है।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि अंगीकरण की युक्ति को अपना कर अनुवाद करने से स्रोत भाषा का वैशिष्ट्य लक्ष्य भाषा में भी समतुल्य बना रहता है। समतुल्यता की यह स्थिति सिर्फ भाषापरक वैशिष्ट्य के स्तर पर ही नहीं बनी रहती, शैलीगत वैशिष्ट्य के स्तर पर भी बनी रहती है। वहीं, सांस्कृतिक संदर्भों में भी देखा जाए तो स्रोत भाषा संस्कृति का लक्ष्य भाषा की संस्कृति तक विस्तार हो जाता है, उसमें उसका स्थानीयकरण हो जाता है। किंतु अनुवाद में इस प्रविधि को अत्यधिक प्रयोग में लाने की प्रवृत्ति से बचना भी चाहिए अन्यथा अपनी भाषा में सिर्फ गृहीत शब्द ही नजर आएँगे। स्वाभाविक है कि उस स्थिति में अपनी भाषा का सहज विकास बाधित होगा।

2.5.2 अनुकूलन (Adaptation)

स्रोत भाषा पाठ के अननुवाद्य शब्दों या अभिव्यक्तियों को ग्रहण करने के अलावा उनका लक्ष्य भाषा में अनुकूलन करने की युक्ति को भी व्यवहार में लाया जाता है। लक्ष्य भाषा में यह अनुकूलन एक प्रकार से लक्ष्य भाषायीकरण करना है। लक्ष्य भाषायीकृत किए शब्द मूल अर्थ अथवा अवधारणा का बोध कराने का माध्यम बन जाते हैं। इसे विशेष प्रकार का अंगीकरण भी कहा जा सकता है क्योंकि इसमें आगत (स्रोत भाषा के) शब्द को लक्ष्य भाषा में अपना तो लिया जाता है, किंतु यथावत नहीं।

अनुकूलन, स्रोत भाषा पाठ के कतिपय शब्दों को अपनी जरूरत के अनुरूप ढालते हुए यानी 'कस्टमाइज्ड' करते हुए लक्ष्य भाषा में व्यवहार में लाने से संबंधित प्रविधि है। इस प्रक्रिया में स्रोत भाषा के शब्द–विशेष के रूप में परिवर्तन आ जाता है, इसलिए इसे 'रूपांतरण' भी कह दिया जाता है। अनुकूलन के कारण शब्द, लक्ष्य भाषा का देशी अथवा घरेलू रूप धारण कर लेते हैं, इसलिए इसे घरेलूकरण (domestication) भी कहा जा सकता है। स्रोत भाषा पाठ में किसी अज्ञात या नई अवधारणा आदि के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द का लक्ष्य भाषा में प्रतिशब्द न मिलने की स्थिति में अनुवादक दो युक्तियाँ अपनाते हुए उनका अनुकूलन करता है। ये युक्तियाँ हैं :

क. अपनी भाषा के व्याकरणिक विधान के अनुसार प्रत्यय लगाकर शब्द को अनुकूलित कर लेना। उदाहरण के लिए, हिंदी के शब्द 'संत' को अंग्रेजी भाषा में अपना तो लिया गया, किंतु उसका विकास अपनी भाषा के व्याकरण के अनुसार करते हुए 'Saint' (न कि Sant) बना दिया। इसी तरह से हिंदी का 'लूट' शब्द अंग्रेजी में 'looting' हो गया। अंग्रेजी में 'brother' शब्द जर्मन से, 'position' शब्द फ्रांसीसी से, 'agile' शब्द इतालवी से और 'Admiral' शब्द अरबी भाषा से तो लिया गया है किंतु उनसे व्युत्पन्न शब्द क्रमशः 'brotherhood', 'positioned', 'agileness'

और 'Admiralty' अंग्रेजी के अपने व्याकरणिक नियमों के अनुसार बने हैं।

यदि हम हिंदी भाषा के संदर्भ में देखें तो अंग्रेजी के 'voltage' शब्द के लिए हिंदी भाषा में प्रयुक्त 'वोल्टता' शब्द देखा जा सकता है जो 'वोल्ट' के साथ 'ता' प्रत्यय के योग से निर्मित किया गया है। रजिस्ट्रीकरण (रजिस्ट्री+करण), सिलिंडराकार (सिलिंडर+आकार), कंप्यूटरीकरण (कंप्यूटर+करण), साबुनीकारक (साबुन+कारक), ऑक्सीकृत (ऑक्सी+कृत), शेयरधारक (शेयर+धारक), गैलवेनोमापी (गैलवेनी+मापी), अपीलकर्ता (अपील+कर्ता), रेलगाड़ी (रेल+गाड़ी) आदि शब्द हिंदी के प्रत्यय आदि लगाकर निर्मित हुए शब्द हैं। मिश्रित रूप वाले ऐसे शब्दों को हिंदी में 'संकर शब्द' एवं अंग्रेजी में 'हाइब्रिड वर्ड्स' (Hybrid words) कहते हैं।

ख. शब्दों की ध्वनियों में थोड़ा–बहुत परिवर्तन करके शब्द का अनुकूलन करना। हिंदी भाषा में 'अकादमी', 'समन', 'फंतासी', 'संतरी', 'तकनीक', 'रपट', 'अपीलीय', 'गोदाम', 'त्रासदी', 'कामदी', और 'रिपोर्ताज' आदि शब्द अंग्रेजी के क्रमशः academy, summons, fantasy, sentry, technique, report, appellate, tragedy, comedy और reporting शब्दों के ध्वनि–साम्य के आधार पर निर्मित शब्द हैं। इसी भाषायी अनुकूलन के कारण ही अंग्रेजी के baptism शब्द के लिए हिंदी में 'बपतिस्मा' लिखा जाता है।

वास्तव में अंगीकरण की प्रविधि को व्यवहार में लाए बिना ही स्रोत भाषा में व्यक्त कथ्य या संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करते समय उपजी खाई के अंतराल को पाटने की दृष्टि से 'अनुकूलन' प्रविधि, अनुवादक के लिए सहायक सिद्ध होती है। इस प्रविधि से अनुकूलित शब्द, आगे चलकर लक्ष्य भाषा का ही अंग बनकर उसके भाषा–भंडार को समृद्ध करने का आधार सिद्ध होते हैं।

यथावत ग्रहण किए गए शब्दों की भाँति आज इस प्रकार के अनुकूलित शब्द भी हिंदी में चलन में हैं। अंग्रेजी भाषा में भी इसी प्रकार के अनुकूलन की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। जैसे 'चंदन' और 'कपूर' जैसे भारतीय शब्द अंग्रेजी में अरबी भाषा के माध्यम से पहुँचे और क्रमशः 'Sandal' और 'Campher' हो गए। इसी भाँति, अंग्रेजी के 'chit' शब्द को देखा जा सकता है, जिसकी उद्‌गम हिंदी का 'चिट्ठी' (chit/chhitthi) शब्द है और 'chitty' का संक्षिप्त रूप अंग्रेजी में 'chit' हो गया। हिंदी का 'खाट', अंग्रेजी में 'बवज' हो गया। इसी प्रकार, अंग्रेजी में प्रयुक्त 'Engine' (एंजिन), 'Pound' (पाउंड), 'Diesel' (डिज़ेल), 'January' (जैनुअरी), 'February' (फैब्रुअरी) आदि शब्द ध्वनि–परिवर्तन के साथ हिंदी भाषा में क्रमशः 'इंजन', 'पौंड', 'डीज़ल', 'जनवरी', 'फरवरी' के रूप में व्यवहृत होते नजर आते हैं।

इस तरह के अननुवाद्य अनुकूलित शब्दों–अभिव्यक्तियों को पारिभाषिक शब्दावली निर्माण करने संबंधी प्रक्रिया में एक विधि के रूप में लाया जाता है। इसके अलावा, काव्यानुवाद, नाट्यानुवाद और विज्ञापनों के अनुवाद में भी अनुकूलन का विशेष तौर पर सहारा लिया जाता है।

2.5.3 शब्दानुवाद (Word for word translation)

'शब्दानुवाद' अनुवाद का एक प्रकार–विशेष है। इसे 'शाब्दिक अनुवाद' भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे 'literal translation' के अलावा, 'verbal translation' भी कहा जाता

है। शब्दानुवाद पर इस पाठ्यक्रम की इकाई संख्या 4 में विस्तार से चर्चा की जाएगी। यहाँ हम अनुवाद की प्रविधि–विशेष के रूप में शाब्दिक अनुवाद पर विचार कर रहे हैं, जिसे कोई भी अनुवादक आम तौर पर व्यवहार में लाया जाता है। अनुवाद की एक प्रविधि–विशेष के रूप में शाब्दिक अनुवाद के महत्व का उल्लेख करते हुए विनय और डर्बलनेट ने कहा है कि 'सिद्वांतः शाब्दिक अनुवाद वह अद्वितीय समाधान है, जो स्वयं में प्रतिवर्तित भी है और पूर्ण भी। इसे आम तौर पर तब व्यवहार में लाया जाता है जब समभाषिक स्रोतीय भाषाओं के बीच परस्पर अनुवाद किया जाता है और विशेष तौर पर तब जब उन दोनों भाषाओं की समान संस्कृति हो।' (In principle literal translation is a unique solution which is reversible and complete in itself. It is most common when translating between two languages of the same family and even more so when they also share the same culture.)

मूल पाठ के शब्दों का लक्ष्य भाषा में अंतरण 'शब्दानुवाद' कहलाता है। इसमें अनुवादक मूल पाठ के प्रत्येक शब्द के जरिए व्यक्त होने वाले अर्थ को लक्ष्य भाषा के समतुल्य अर्थ व्यक्त करने वाले प्रतिशब्द के द्वारा स्थानापन्न करता चलता है। इस समतुल्य अर्थ–प्रस्तुति के लिए अनुवादक स्रोत भाषा के शब्दों के कोशगत अर्थ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करता है, इसलिए शब्दानुवाद को 'कोशगत अनुवाद' भी कह दिया जाता है।

शब्दानुवाद में स्रोत भाषा के प्रत्येक 'शब्द' को अनुवाद की मूल इकाई मानकर उसका लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है। यह मूलनिष्ठ अनुवाद होता है। शब्दानुवाद करते समय मूल पाठ की विषय–वस्तु के साथ–साथ उसकी भाषा का भी ज्यों का त्यों अनुवाद हो जाता है। इसमें भी स्रोत भाषा पाठ में प्रयुक्त सभी शब्दों को अनूदित किया जाता है। किंतु यह 'शब्द' को केंद्र में रखकर किए गए अनुवाद करने के स्थान पर 'वाक्य' के स्तर पर किया जाने वाला अनुवाद है। विशेष बात यह है कि इस प्रकार के अनुवाद में मूल पाठ के प्रत्येक शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य आदि सभी का अनुवाद तो किया जाता है किंतु शब्दक्रम मूल पाठ की वाक्य संरचना के समान न होकर लक्ष्य भाषा की वाक्य संरचना में ढला हुआ होता है। यानी मूल पाठ के शब्दों की उपेक्षा किए बिना लक्ष्य भाषा वाक्य संरचना में कथ्य का संप्रेषण शब्दानुवाद है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित अंग्रेजी पाठ और उसका अनुवाद देखिए :

मूल :

'The country's largest car-maker Maruti Suzuki India said it has hiked prices of most of its models by up to Rs. 22,500 with immediate effect to partially offset the impact of the rise in costs. In March, the Company had said that over the past year, the sales of the company's vehicles has been impacted adversely due to an increase in costs.'

अनुवाद :

'देश की सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया ने बताया कि बढ़ी हुई लागतों के प्रभाव को कम करने के लिए उसने अपने अधिकांश मॉडलों की कीमत में तत्काल प्रभाव से 22,500 रुपए तक की बढ़ोतरी कर दी है। मार्च में कंपनी ने कहा था कि पिछले एक वर्ष के दौरान बढ़ती लागत के कारण कंपनी की वाहनों की बिक्री पर बुरा असर पड़ा है।'

शाब्दिक अनुवाद के मूल में यह धारणा निहित रहती है कि अनुवादक स्रोत भाषा पाठ

के किसी भी अंश को अनूदित पाठ में न तो छोड़े और न ही अपनी ओर से कोई नया शब्द जोड़े। इस युक्ति को अपनाते हुए अनुवादक मूल अननूद्य अभिव्यक्ति के रूप, शैली और अर्थ को लक्ष्य भाषा में शाब्दिक अनुवाद करके प्रस्तुत करता है। सिर्फ इतना ही नहीं, स्रोत भाषा शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में प्रतिशब्द प्रस्तुत करने की इस युक्ति को सामाजिक–सांस्कृतिक शब्दावली प्रयोग करने के स्तर तक विस्तार दे दिया जाता है। उदाहरण के लिए, 'गृह–देवता' शब्द का शाब्दिक अनुवाद 'family God' करना। शाब्दिक स्तर पर अनूदित इसी प्रकार के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

अर्चना	:	'worship'
गोपूजा	:	'cow worship'
गोधूलि	:	'cow-dust hour'
भूत	:	'ghost'
नरक	:	'hell'
भूदान	:	'gift of land'

लेकिन शब्दानुवाद की इस प्रविधि का अक्षरशः पालन संभव नहीं क्योंकि दो भाषाओं की संरचना एकसमान नहीं होती, उनके वाक्य बनाने के तरीके भिन्न–भिन्न होते हैं। इसके साथ–साथ हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि विभिन्न भाषाओं में अर्थाभिव्यक्ति के तरीके भी भिन्न–भिन्न होते हैं। इसलिए अनुवादक को चाहिए कि वह स्रोत भाषा पाठ के मूल भाव को सुरक्षित हुए शब्दों के लिए प्रतिशब्द स्थानापन्न करते हुए अनुवाद करे। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्य और उनका अनुवाद देखिए :

'In June, the weather is very bad.' : 'जून में मौसम बहुत खराब रहता है।'

'Please put these things in the bag.' : 'जरा इन चीजों को थैले में डाल दें।'

'I am traveling in first class.' : 'मैं पहले दर्जे में यात्रा कर रहा/रही हूँ।'

वैसे, शाब्दिक अनुवाद करते समय, कथ्य की स्पष्टता की ओर भी ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए हिंदी की मूल सामग्री और उसका अंग्रेजी अनुवाद देखिए :

मूल : पूर्वी उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में सोमवार सुबह लोगों से एक नाव गंगा नदी में पलट गई। इसमें करीब सौ लोग सवार थे, जिनमें से लगभग अस्सी लोग मारे गए। नाव पर सवार बलिया के कई गाँवों के लोग मुंडन संस्कार करने नदी पार करके बिहार जा रहे थे।

अनुवाद : Around 80 people were feared dead when an over-crowded boat ferrying around 100 passengers capsized in the Ganga River in Balia district of eastern Uttar Pradesh on Monday morning. The passengers, most of them residents of many villages in Balia were crossing the river to go to Bihar to participate in a tonsuring ceremony for infants.

आप मूल और अनुवाद के रेखांकित अंशों को ध्यान से देखिए। मूल में केवल 'मुंडन संस्कार' शब्द का प्रयोग किया गया है। बच्चों का मुंडन संस्कार भारतीय संस्कृति का

एक हिस्सा है। अंग्रेजी में इस भाव को व्यक्त करने के लिए 'मुंडन संस्कार' शब्द के समतुल्य पर्याय 'tonsuring ceremony' शब्दों का तो प्रयोग कर लिया गया है, लेकिन साथ ही स्पष्टता लाने के लिए इसके साथ 'for infants' शब्द जोड़ दिया गया है ताकि भारतीय संस्कृति से अपरिचित व्यक्ति को भी यह बोध हो जाए कि मुंडन संस्कार बच्चों का किया जाता है।

शब्दानुवाद और काल्क (Calque) : शब्दानुवाद का विस्तार हमें 'काल्क' (Calque) के रूप में भी नजर आता है। विनय और डर्बलनेट ने अनुवाद की एक प्रविधि के रूप में 'काल्क' (Calque) की जो चर्चा की है, वह भी 'अंगीकरण' का ही एक प्रकार है। लेकिन यह दूसरी भाषा के शब्द अथवा अभिव्यक्ति को अपनी भाषा में विशेष प्रकार से अंगीकृत करना है। इसमें स्रोत भाषा के प्रत्येक तत्व का लक्ष्य भाषा में शब्दानुवाद किया जाता है।

इस अवधारणा का संबंध वाक्य अथवा वाक्यांश में प्रयुक्त शब्दों के अनुवाद से है। इसका अर्थ यह है कि किसी एक भाषा के वाक्य अथवा वाक्यांश में प्रयुक्त शब्दों का दूसरी भाषा में प्रतिशब्द अनुवाद कर देना 'काल्क' है। यानी यह दूसरी भाषा से ग्रहण करने की वह विशिष्ट रीति है जिसमें स्रोत भाषा के किसी पदबंध/वाक्यांश अथवा वाक्य का दूसरी भाषा में शाब्दिक अनुवाद करने की प्रविधि है। शाब्दिक अनुवाद केवल शब्द के स्तर पर ही नहीं, वाक्यांश (phrase) अथवा शब्द के भाग अर्थात रूपिम (morpheme) के स्तर पर भी हो सकता है। यह वास्तव में 'गृहीत अनुवाद' (loan translation) ही है। इस तरह 'काल्क', स्रोत भाषा के शब्द का दूसरी भाषा में शब्दार्थगत (semantic) अनुवाद करते हुए अंगीकरण करना है। उदाहरण के लिए, 'सफेद झूठ' और 'white lie' को देखा जा सकता है। इनमें से कौन–सा पदबंध किसका अनुवाद है, कहना कठिन है। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण हैं – 'requirement analysis' – 'आवश्यकता विश्लेषण', 'satisfactory case' – 'संतोषजनक मामला', 'local body' – 'स्थानीय निकाय', 'economic growth' – 'आर्थिक संवृद्धि', 'black marketing' – 'चोर बाजारी', 'science-fiction' – 'विज्ञान–कथा' आदि।

स्रोत भाषा के किसी पदबंध अथवा वाक्य में व्यक्त कथ्य अथवा संदेश की लक्ष्य भाषा में समान अभिव्यक्ति करनी हो तो काल्क विधि को व्यवहार में लाया जाता है। तब स्रोत भाषा के पदबंध अथवा वाक्य का लक्ष्य भाषा में शब्द–प्रतिशब्द अनुवाद कर दिया जाता है। इसे वाक्यांश–प्रति–वाक्यांश (phrase for phrase translation) भी कहा जा सकता है। तात्विक दृष्टि से यह शब्द–प्रति–शब्द (word-for-word translation) अथवा शब्दानुवाद (literal translation) का ही विस्तारित रूप है।

शब्दानुवाद में भ्रामक मित्रों से बचना : शब्दानुवाद करते समय अनुवादक को भ्रामक मित्रों से बचना चाहिए। असल में होता यह है कि जब दो भाषाओं की व्युत्पत्ति एक ही भाषा–परिवार से हुई हो या दोनों में सांस्कृतिक समानता हो या फिर किसी अन्य भाषा से गृहीत शब्द उनके शब्द–परिवार का अंग बन चुके हों तो उनमें कई शब्दों के स्तर पर समानता का नजर आना स्वाभाविक हो जाता है। उदाहरण के लिए, संस्कृत के 'दंत' शब्द को देखा जा सकता है, जिसके लिए हिंदी में 'दाँत', मराठी में 'दात' तथा पंजाबी और कश्मीरी में 'दंद' के रूप में इस शब्द को व्यवहार में लाया जाता है। इसी प्रकार के हिंदी के 'चाकू' शब्द को भी देखा जा सकता है, जोकि तुर्की मूल का शब्द है। यह शब्द हिंदी के अलावा, भारत की पंजाबी, उर्दू, सिंधी, मराठी और कन्नड़ भाषाओं में भी इसी रूप में व्यवहार में लाया जाता है, और ओडिया, गुजराती, तेलुगु तथा बांग्ला में इसका

रूप है – 'चाकु'। यदि इस प्रकार के शब्दों की स्रोत और लक्ष्य भाषा में अर्थ के स्तर पर समानता व्याप्त हो तो अनुवादक को कोई कठिनाई नहीं होती।

लेकिन, अनुवादक के सामने समस्या उस समय पैदा होती है, जब इस प्रकार के समरूप शब्द, स्रोत और लक्ष्य भाषा में समान रूप से प्रयुक्त तो हों, लेकिन वहाँ वे अलग–अलग अर्थों का बोध कराएँ। अनुवादक इस प्रकार के मैत्रीपूर्ण शब्दों से भ्रम की स्थिति में आ जाता है। इसका नतीजा यह हो सकता है कि अनूदित पाठ में अर्थ का अनर्थ हो सकता हैं वह विकृत और भ्रामक या फिर अटपटा और हास्यास्पद तक भी हो सकता है। इस प्रकार की रूपसाम्य भिन्नार्थी शब्द 'अनुवादक के भ्रामक मित्र' (false friends of translator) होते हैं। इसे स्पष्ट करने के लिए हम 'वासना' शब्द को उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं। हिंदी में यह शब्द आम तौर पर 'कामना, इच्छा; और भावना (जैसे काम वासना)' के अर्थ को व्यक्त करने के लिए व्यवहार में लाया जाता है। मलयालम भाषा में भी यही 'वासना' शब्द प्रयुक्त तो होता है, लेकिन वहाँ वह 'प्रतिभा' अथवा 'नैसर्गिक रुचि' के अर्थ को व्यक्त करता है। इस प्रकार के शब्द वास्तव में अनुवादक के भ्रामक मित्र होते हैं।

दोनों भाषाओं का आधिकारिक ज्ञान रखने वाले और प्रवीण अनुवादकों को स्रोत और लक्ष्य भाषा में व्यवहार में लाए जाने वाले इस प्रकार के रूपसाम्य भिन्नार्थी शब्दों में व्याप्त अर्थगत अंतर का बोध होता है और वे इस संबंध में पर्याप्त सावधानी भी बरतते हैं। सफल अनुवाद–कर्म के लिए यह जरूरी भी माना जाता है कि भिन्न अर्थ व्यक्त करने वाले इस प्रकार के समरूपी शब्दों की अनुवादक को यह जानकारी होनी चाहिए कि इस प्रकार के भ्रामक शब्द अलग–अलग भाषायी समाज में किस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। किंतु, नौसिखिए अनुवादक या उनकी ओर से जरा–सी असावधानी अर्थ का अनर्थ आदि कर सकती है। इसलिए अनुवादकों को इस प्रकार के भ्रामक मित्रों से बचने की सलाह दी जाती है। आइए, अब हम इस अवधारणा के बारे में जानें।

'अनुवादक के भ्रामक मित्र' (false friends of translator) की अवधारणा फ्रांसीसी भाषा की अभिव्यक्ति 'les faux amis ('ला फॉक्स अमिस) का अंग्रेजी अनुवाद है। इस अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी भाषाविद मैक्सिम कोसलर (Maxime Koessler) और जूलियस डेरोक्विग्नी (Jules Derocquigny) ने 1928 में प्रकाशित 'Les faux amis, ou, les trahisons du vocabulaire anglais' (False Friends, or, the Treacheries of English Vocabulary) शीर्षक पुस्तक में किया था। यह अवधारणा मूलतः भाषाविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र 'भ्रामक मित्र' (false friends) से संबंधित है, जिसे 'false cognate' (भ्रामक सजातीय शब्द) भी कहा जाता है। 'अनुवादक के भ्रामक मित्र' का अर्थ है – स्रोत और लक्ष्य भाषा के ऐसे शब्द अथवा संरचनाएँ जो एक जैसी उच्चरित की जाती हैं अथवा दिखने में एक–जैसी (समरूप) हैं लेकिन उनमें अर्थ के धरातल पर भिन्नता होती है। रूपसाम्य रखने वाले ये वे शब्द होते हैं जो किन्हीं दो भाषाओं में शब्द–विशेष के रूप में तो प्रयुक्त होते हों, लेकिन वे अलग–अलग अर्थ को व्यक्त करते हों। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से कहा जा सकता है कि इस प्रकार के शब्द भ्रम पैदा करते हैं। दो भाषाओं के बीच रूपसाम्य भिन्नार्थी शब्दों की उपस्थिति की यह स्थिति किन्हीं दो भाषाओं में आम तौर पर, लंबे समय तक परस्पर भाषायी आदान–प्रदान और प्रभाव के कारण उत्पन्न होती है। स्पष्ट है कि 'भ्रामक मित्र' का संबंध किन्हीं दो भाषाओं अथवा बोलियों के उन शब्द–युग्मों से माना जाता है जो रूपसाम्य और/अथवा ध्वनि–साम्य तो होते हैं किंतु उनका अर्थ

भिन्न–भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त होने वाले 'sensible' शब्द को देखा जा सकता है, जिसका अर्थ है – 'thoughtful'। लेकिन, स्पैनिश और फ्रांसीसी भाषाओं में यही शब्द 'sensitive' अर्थ का व्यंजक है। इसी प्रकार, चीनी भाषा के एक शब्द का उल्लेख किया जा सकता है जिसका शाब्दिक रूप 'hand paper' है। इसका चीनी भाषा में अर्थ है – 'toilet paper'। लेकिन, जापानी भाषा में यही शब्द 'letters' अर्थ को व्यक्त करने के प्रयुक्त किया जाता है। देश और काल के प्रभाव में शब्द के अर्थ में परिवर्तन का एक उपयुक्त उदाहरण अंग्रेजी के 'corn' शब्द का है। इंगलैंड आदि यूरोपीय देशों में यह 'अनाज' के अर्थ को व्यक्त करने वाला शब्द है, जबकि उत्तरी अमेरिका में यही शब्द केवल 'मक्का' अर्थ के व्यंजक शब्द है।

असल में भाषा निरंतर विकासनशील रहती है। इसीलिए 'भाषा बहता नीर' कहा जाता है। विकास की इस प्रक्रिया में, समय के साथ–साथ भाषा में लगातार परिवर्तन भी होता रहता है। यह परिवर्तन, कतिपय कारणों से शब्दों के अर्थ के स्तर पर आ जाता है। जैसे, भाषा–विशेष के प्राचीन रूप के शब्द और वर्तमान भाषा–रूप में प्रयुक्त शब्द में अर्थ का अंतर आ जाता है। इस संदर्भ में हिंदी के 'कुशल' और 'गवेषणा' शब्दों का विशेष तौर पर उल्लेख किया जा सकता है। 'कुश लाने वाले' के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले 'कुशल' शब्द का अर्थ–विस्तार अब 'प्रवीण' के अर्थ में हो चुका है। इसी प्रकार, पहले 'गाय की इच्छा' का द्योतक शब्द 'गवेषणा' गाय की खोज के अर्थ में प्रचलित था, जो कालांतर में सभी वस्तुओं आदि की खोज के लिए प्रयोग में लाया जाने जाना लगा। वास्तविकता यह है कि किसी भी भाषा में शब्दों के अर्थ के स्तर पर अर्थ–विस्तार, अर्थ–संकोच, अर्थादेश, अर्थोत्कर्ष अथवा अर्थापकर्ष आदि होते रहते हैं। इस प्रवृत्ति के प्रमाण के लिए, उदाहरण के रूप में पुरानी और आधुनिक अंग्रेजी का भी उल्लेख किया जा सकता है। दोनों में इस अंतर का उल्लेख करते हुए 'कैम्ब्रिज एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज' का निम्नलिखित उद्धरण इसी आयाम को पुष्ट करता हुआ नजर आता है :

'The vocabulary of Old English present a mix picture, to those encountering it for the first time…Particular care must taken with words which look familiar, but whose meaning is different in Modern English. An Anglo-Saxon 'wif' was any woman, married or not. A 'fugol' 'fowl' was any bird, not just a farmyard one. 'Sona' (soon) meant 'immediately', not 'in little while'; 'won' (wan) meant 'dark', not 'pale'; and 'faest' (fast) meant 'firm, fixed', not 'rapidly'. There are 'false friends' when translating out of Old English.'

शब्द–विशेष के जरिए अर्थ के स्तर पर इसी प्रकार के अंतर ब्रिटिश अंग्रेजी में और अमेरिकी अंग्रेजी के स्तर पर भी नजर आते हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश अंग्रेजी के 'lorry' शब्द को अमेरिकी अंग्रेजी में 'truck' कहा जाता है। इसी प्रकार, क्रमशः ब्रिटिश और अमेरिकी अंग्रेजी के कुछ अन्य शब्द देखिए – rubber - eraser, crisps - chips, inquiry officer - information officer, autumn – fall, handbag – purse, film – movie, railway station - railroad depot, biscuit – cookie, sofa – couch, rubbish - trash आदि।

वास्तव में अगर शब्दों की रूपसाम्यता तो बनी रहे, किंतु अर्थ के स्तर पर अंतर आ चुका हो तो अनुवाद करते समय 'भ्रामक मित्र' संशय की स्थिति बना देते हैं क्योंकि सादृश्यता रखने वाले ये शब्द उसी रूप में लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त होने पर भिन्न अर्थ के व्यंजक होते हैं। इस तरह, दूसरी भाषा में मित्रवत महसूस होता शब्द, विकृत और भ्रामक अर्थ व्यंजक

हो जाता है। इस प्रकार के शब्दों को 'भ्रामक मित्र' (false friends) कहा जाता है।

रूपसाम्यता वाले शब्दों की भ्रामक भूमिका को स्पष्ट करने के लिए हम भारतीय भाषाओं के भी कुछ उदाहरण देखते हैं। इस संदर्भ में, उदाहरण के लिए, तत्सम शब्द 'पशु' को देखा जा सकता है, जिसका हिंदी में अर्थ है – 'जानवर'। उल्लेखनीय है कि यही शब्द द्रविड़ भाषा परिवार की तमिल और मलयालम भाषाओं में भी स्थान प्राप्त किए हुए है। लेकिन, वहाँ 'पशु' का अर्थ है – 'गाय'। इसी प्रकार, फारसी मूल के 'राजीनामा' शब्द को देखा जा सकता है, जिसका हिंदी में अर्थ है – 'सहमति पत्र'। लेकिन इसका मराठी भाषा में अर्थ है – 'इस्तीफा/त्यागपत्र'। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण हैं :

- 'अनुसंधान' शब्द का हिंदी में अर्थ है – 'शोध/गवेषणा', जबकि बांग्ला में इस शब्द का अर्थ है – 'पूछताछ'।
- 'अतीत' शब्द तमिल में 'बहुत' या 'बड़ा' का द्योतक है, जबकि हिंदी में 'बीता हुआ' अथवा 'भूत' का।
- 'सड़ना' शब्द पंजाबी में जलन के अर्थ (जैसे, किसी की प्रगति से जलना) का द्योतक है और हिंदी में 'सड़–गल' जाने का।
- 'हिंसा' शब्द का हिंदी अर्थ है – 'क्रूरता', जबकि बांग्ला में इसका अर्थ है – 'ईर्ष्या'।
- 'अनुवाद' शब्द का हिंदी अर्थ है – 'तर्जुमा/भाषांतर' है, जबकि मलयालम में इसका अर्थ है – 'अनुमति'।
- हिंदी के 'शिक्षा' शब्द का अर्थ है – 'पढ़ाई' और मलयालम में में यह 'दंड' अथवा 'जुर्माना' अर्थ का व्यंजक है।
- 'अनुमान' शब्द का हिंदी अर्थ 'अंदाजा' है, जबकि कन्नड और तेलुगु में यह 'शंका' और 'संदेह' के अर्थ का द्योतक है।
- 'जहान' शब्द नेपाल में 'परिवार' अथवा 'पत्नी' के अर्थ का द्योतक है तथा हिंदी में 'जगत', 'संसार' का।
- 'वाष्प' शब्द का हिंदी अर्थ है – 'भाप', जबकि गुजराती और तेलुगु (वाष्पन) में इसका अर्थ है – 'आँसू'।
- 'बनिया' शब्द ओडिया में 'सुनार' का द्योतक है और हिंदी में 'वैश्य' या 'व्यवसायी जाति' का।
- फारसी मूल के शब्द 'ज़मींदारी' का कश्मीरी में अर्थ है – 'कृषि', जबकि हिंदी में इसका अर्थ है – 'खेती की जमीन के मालिक द्वारा अपनी जमीन को लगान पर देना।,

अनुवादक को इस प्रकार के भ्रामक मित्रों से बचने की सलाह दी जाती है। अनुवादक को यह सावधानी बरतनी चाहिए कि इस ओर समुचित ध्यान दे कि स्रोत और लक्ष्य भाषा में शब्द, रूपसाम्य होने पर भी क्या अर्थगत साम्यता रखता है अथवा नहीं। यानी वह शब्द–विशेष लक्ष्य भाषा में भी समान अर्थ का व्यंजक है; कहीं वह भिन्न अर्थ का व्यंजक तो नहीं या भिन्न अर्थ तो नहीं दे रहा। यदि रूपसाम्यता वाला शब्द भिन्न अर्थ व्यक्त

करने वाला हो तो स्रोत भाषा के आधार पर उस शब्द के मूल आशय को ध्यान में रखते हुए लक्ष्य भाषा का प्रतिशब्द प्रयोग करना चाहिए, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है। अनुवादक को इन भिन्न अर्थों की जानकारी होने के साथ–साथ लक्ष्य भाषा के परिवेश एवं संस्कृति का भी ज्ञान होना चाहिए। इस प्रकार, यदि अनुवादक को दोनों भाषाओं के इन 'भ्रामक मित्रों' का बोध हो तो वह सार्थक अनुवाद कर पाने योग्य हो जाता है। अन्यथा, अर्थ का अनर्थ होने की पूरी–पूरी संभावना बन जाती है और उसके द्वारा किया गया अनुवाद अटपटा, भ्रामक और हास्यास्पद तक हो सकता है।

वैसे, किन्हीं दो भाषाओं के एक–दूसरे के नजदीकी संपर्क, प्रकृतिगत समानता अथवा एक ही भाषा–परिवार की भाषाएँ होने की वजह से हो सकता है कि उनमें शब्दबद्धता के तरीके और उनके अर्थ भी लगभग एकसमान हों। इस प्रकार की दो समस्रोतीय भाषाओं में लिखी सामग्री के परस्पर अनुवाद में शब्दानुवाद करना सरल होता है। उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी से जर्मन में अथवा फ्रांसीसी से अंग्रेजी में अनुवाद करना। किंतु अंग्रेजी–हिंदी आदि दो असमान स्रोतीय भाषाओं में परस्पर शाब्दिक अनुवाद के अधिक क्लिष्ट होने की संभावना बनी रहती है। वहाँ 'शब्द' को इकाई मानकर अनुवाद करना सार्थक सिद्ध नहीं हो पाता।

इसके अलावा, जब स्रोत भाषा पाठ सूचनाप्रद और तथ्यात्मक अधिक हो और वह विचारोन्मुखी कम हो तो उसका शाब्दिक अनुवाद सरल होता है। या फिर, अभिधापरक भाषा में लिखी सामग्री का शब्दानुवाद बेहतर ढंग से संभव हो पाता है। उदाहरण के लिए, ज्ञानात्मक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों से संबंधित पाठों, विधिक सामग्री, प्रशासनिक सामग्री आदि कुछ विशेष किस्म की सामग्री का शाब्दिक अनुवाद किया जा सकता है और अनूदित पाठ में गलतियाँ भी कम होती है। यही कारण है कि शब्दानुवाद को मूलनिष्ठ अनुवाद माना जाता है और वह यथातथ्य एवं निश्चित होता है।

इस प्रकार का अनुवाद (अर्थात शब्दानुवाद) कंप्यूटर के द्वारा आसानी से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी–हिंदी अनुवाद के लिए 'मंत्र राजभाषा' नामक कंप्यूटर सहायक अनुवाद प्रणाली, प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि एवं लघु उद्योग क्षेत्रों, सूचना प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य सुरक्षा जैसे विषय–क्षेत्र विशेष केंद्रित (domain-specific) अनुवाद कार्य के लिए उपयोग में लाया जा रहा है, जोकि वास्तव में शब्द–आधारित मशीनी अनुवाद प्रणाली है।

चूँकि शब्दानुवाद के द्वारा मूल सामग्री के सभी शब्दों को लक्ष्य भाषा की प्रकृति वाली वाक्य संरचना में प्रस्तुत किया जाता है, इसलिए यह मान लिया जाता है कि इस आधार पर किया गया अनुवाद 'मूल कृति का प्रामाणिक अनुवाद' होता है। लेकिन, इसका इसका यह अर्थ नहीं है कि शब्दानुवाद, सभी प्रकार की सामग्री के अनुवाद की दृष्टि से उपयुक्त रहता है। साहित्यानुवाद, संस्कृतिपरक साहित्य के अनुवाद और मुहावरे–लोकोक्तियों आदि के अनुवाद में इसे केवल आवश्यकता के अनुसार ही व्यवहार में लाया जाता है। उदाहरण के लिए, 'Two and two make four' – 'दो और दो चार', 'after a storm comes calm' –'तूफान के बाद शांति', 'Apple of one's eyes' – 'आँख का तारा', 'simple living, high thinking' – 'सादा जीवन, उच्च विचार', 'as you sow, so must you reap' – 'जैसा बोओगे वैसा काटोगे'।

वास्तव में जिस सामग्री में कथ्य की प्रधानता रहती है और शैली की नहीं, उनके अनुवाद

में शब्दानुवाद की रणनीति को अपनाना काफी हद तक सफल रहता है। वैसे, इस प्रकार के अनुवाद से भाषा की स्वाभाविकता नष्ट होने की आशंका बनी रहती है क्योंकि शाब्दिक अनुवाद वास्तव में कृत्रिम प्रतीत होते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि अनुवादक के द्वारा शब्दानुवाद की इस प्रविधि को अपनाने से अनुवाद की भाषा की अपनी मूल सहजता के खो जाने और स्रोत भाषा की छाया–कलुशित होने की आशंका बनी रहती है। उदाहरण के लिए, आपने सड़क पर बोर्ड लगा देखा होगा जिस पर यह लिखा मिलता है कि 'कार्य प्रगति पर है। वास्तव में यह 'work in progress' का शब्दानुवाद है, जो न तो हिंदी भाषा की दृष्टि से सही है और न ही सार्थक। हिंदी में कहा जाना चाहिए – 'यहाँ/आगे काम चल रहा है।' इसी तरह, 'Let me free your mind from one impediment' का अनुवाद 'आइए मैं आपका वहम मिटा दूँ' के स्थान पर 'आओ मैं आपके दिमाग से एक रुकावट/उलझन दूर कर दूँ' करना। या फिर, 'I saw you in my mind's eye' का अनुवाद 'मैंने तुम्हें अपने मस्तिष्क की आँखों में देखा' करना (जबकि इसका सही अनुवाद होगा – 'मैंने तुम्हें कल्पना में देखा।') अनुवादक को ऐसी स्थितियों से बचना चाहिए।

2.5.4 भावानुवाद (Paraphrase)

भावानुवाद को अंग्रेजी में 'Sense-for-sense Translation' के अलावा 'Conceptual Translation' और 'Faithful Translation' भी कहा जाता है। इस प्रकार के अनुवाद को पर्यायोक्ति (periphrases) भी कहा जाता है, जिसका अर्थ यह है कि अनुवादक स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति में निहित भाव को लक्ष्य भाषा में एक से अधिक शब्दों में स्पष्ट करते हुए अनुवाद करता है। चूँकि इस तरह किए जाने वाले अनुवाद में मूल पाठ के प्रत्येक शब्द के स्थान पर उनके जरिए अभिव्यक्ति प्राप्त आशय को ध्यान में रखा जाता है, इसलिए इसे 'आशय–प्रति–आशय अनुवाद' (intention by intention translation) भी कहा जाता है।

भावानुवाद को शाब्दिक अनुवाद की विपरीत स्थिति के रूप में स्वीकार किया जाता है। शाब्दिक अनुवाद करते समय अनुवादक अपना ध्यान मूल पाठ के शब्दों पर केंद्रित रखता है, जबकि भावानुवाद में मूल पाठ के भाव पर ध्यान केंद्रित रखा जाता है। शब्दानुवाद में जहाँ अनुवादक से यह अपेक्षा रहती है कि वह मूल पाठ के कथ्य के स्थान पर केवल शब्द को ही ध्यान में रखते हुए तथा अपनी ओर से कुछ भी जोड़े अथवा छोड़े बिना मूल पाठ की प्रत्येक इकाई (शब्द) का अनुवाद करे जबकि भावानुवाद करते समय अनुवादक स्वयं को मूल कृति की वाक्य रचना पर केंद्रित न करके उनमें निहित मूल भाव को ग्रहण करने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, 'acid test' में निहित भाव को ध्यान में रखते हुए इसका हिंदी अनुवाद 'अम्ल परीक्षा' के स्थान पर 'अग्नि परीक्षा' करना। इसी प्रकार, 'dead body' के लिए 'मृत शरीर' के स्थान पर 'शव', 'resource person' के लिए 'संसाधन विशेषज्ञ' के स्थान पर 'विशेषज्ञ/विषय–विशेषज्ञ, 'ground realities' के लिए 'भूमि की वास्तविकता' के स्थान पर 'ठोस वास्तविकता/वस्तुस्थिति' और 'a man with rank' का 'प्रतिष्ठित व्यक्ति' अनुवाद करना। इस प्रकार, स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि भावानुवाद से तात्पर्य है – मूल भाषा सामग्री के लेखक के द्वारा अभिव्यंजित मूल आशय अथवा भावों को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना। इस प्रकार का अनुवाद करते समय कभी मूल पाठ के अनुच्छेद को, कभी समूचे वाक्य को, कभी उपवाक्य को और कभी शब्द के आलोक में भावानुवाद किया जाता है। ऐसा भी हो सकता है कि भावानुवाद की इस प्रक्रिया में कभी संपूर्ण पाठ को ही भाव के आधार पर अनुवाद करने का आधार बना लिया जाए।

भावानुवाद करते समय अनुवादक, मूल के संदर्भ के अनुसार पर्याय का प्रयोग करने के प्रति पर्याप्त सावधानी बरतता है क्योंकि विभिन्न अर्थ–व्यंजनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले स्रोत भाषा के किसी शब्द–विशेष के लक्ष्य भाषा में भी भिन्न–भिन्न पर्याय हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के 'base' शब्द के उनमें निहित अर्थच्छटाओं के अनुसार हिंदी पर्याय इस प्रकार हैं – (1) आधार, पीठ (2) मूल (3) हीन, खोटा (4) प्रकृति (5) प्रातिपादिक (6) आधार रूप (7) निम्नतम (8) कच्चा आदि।

भावानुवाद की प्रक्रिया विशिष्ट होती है। इसमें स्रोत भाषा पाठ का यंत्रवत अनुसरण नहीं किया जाता है। मूल लेखक अथवा कवि द्वारा अपनी रचना में व्यक्त सौंदर्य, आनंद, चिंता, दुःख–कष्ट आदि भावों अथवा मूल आशय को लक्ष्य भाषा–भाषी पाठक के समक्ष प्रस्तुत करना भावानुवाद की अनिवार्य शर्त है। इस प्रकार का अनुवाद करते समय अनुवादक संप्रेषणीयता को महत्व देता है, वह मूल पाठ के अर्थ–भाव और विचार को अनूदित पाठ में पूरी तरह से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि शाब्दिक अनुवाद में अनुवादक मूल पाठ के शरीर पर विशेष रूप से ध्यान देता है जबकि भावानुवाद में मूल की आत्मा पर ध्यान दिया जाता है। यही कारण है कि इसे अंग्रेजी में 'Sense-for-sense Translation' कहा जाता है।

भावानुवाद में स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियों की गंध नहीं आती क्योंकि अनुवादक शब्द–रचना, वाक्य–विन्यास और भाषिक मुहावरे आदि को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इस प्रस्तुति में वह आवश्यकता के अनुसार अनुवाद में कुछ जोड़ने अथवा छोड़ने की स्वतंत्रता भी लेता है। इसके अलावा, वह मूल के लंबे–लंबे वाक्यों को सुविधा एवं लक्ष्य भाषा की आवश्यकता के अनुसार छोटे–छोटे वाक्यों में विभाजित करते हुए स्वच्छंद रूप से अनुवाद करता है। इस स्वच्छंदता के आधार पर यानी भाषा की सभी युक्तियों का सहारा लेते हुए अनुवादक, अनूदित पाठ को मूल की भाँति मौलिक, सहज, रोचक और सुपाठ्य रूप में प्रस्तुत कर पाता है। भावानुवादित सामग्री में मौलिक लेखन जैसा प्रवाह एवं रोचकता का बने रहने से उसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है मानो वह स्वतंत्र मूल लेखन कर्म किया गया हो। अनुवाद का यह प्रकार वास्तव में अनुवादक की सृजनात्मक प्रतिभा का परिचायक होता है। इस संदर्भ में फिट्ज्जेराल्ड द्वारा अनूदित 'रूबाइयत ऑफ उमर खैयाम' कृति का हरिवंशराय बच्चन द्वारा किए गए हिंदी अनुवाद का विशेष तौर पर उल्लेख किया जा सकता है। इस संदर्भ में, निम्नलिखित अंग्रेजी पाठ और उसका बच्चन द्वारा किया गया भावानुवाद देखिए :

मूल :

With me along some strip of Herbage strow
That just divides the desert from the sown
Where name of slave and sultan scarce is known, and pity Sultan Mohamud on his throne.

अनुवाद :

चलो, चलकर बैठें उस ठौर,
बिछी जिस थल मखमली–सी घास,

जहाँ जा शस्य–श्यामला भूमि
धवल मरु के बैठी है पास
जहाँ कोई न किसी का दास,
जहाँ कोई न किसी का नाथ,
भूपति महमूद सिहाए भाग
जहाँ हमको यदि देखे साथ।

इस तरह से समतुल्य भावों को प्रस्तुत करते समय अनुवादक मूल में कुछ जोड़ता भी चलता है, जिसे अंग्रेजी में 'addition in translation' कहा जाता है। मूल पाठ से आगे बढ़ते हुए अनूदित पाठ में कुछ जोड़ने के मूल में अनुवादक का यही प्रयास होता है कि अनूदित पाठ, लक्ष्य भाषी पाठक वर्ग के लिए संप्रेषणीय हो। इस संदर्भ में निम्नलिखित अंग्रेजी मूल और उसका हिंदी भावानुवाद देखा जा सकता है :

मूल :

Pakistan temporarily blocked all major social media platforms in a bid to prevent protesters linked to a far-right group, the Tehreek-e-Labbail Pakistan, from coordinating mass protests demanding the eviction of the French envoy from the country.

भावानुवाद :

पाकिस्तान सरकार ने विरोध प्रदर्शनों को रोकने के प्रयास में ट्विटर, फेसबुक और वाट्सएप जैसे प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों की सेवाओं पर अस्थायी रोक लगा दी है। यह कदम कट्टरपंथी समूह तहरीक–ए–लब्बैक पाकिस्तान (टी.एल.पी.) के विरोध प्रदर्शनों के बाद उठाया गया। टी.एल.पी. फ्रांस के राजदूत को पाकिस्तान से निकालने की माँग कर रहा है।

आपने गौर किया होगा कि भावानुवाद करते समय रेखांकित शब्दों को जोड़कर अनूदित पाठ को सहज बनाने की सार्थक कोशिश की गई है। सहजता लाने के इस प्रयास में अंग्रेजी के एक जटिल वाक्य में प्रस्तुत कथ्य को हिंदी में तीन वाक्यों में विभाजित करके प्रस्तुत किया गया है। इस तरह से अनुवादक ने अनूदित पाठ को सहज संप्रेषणीय बनाने का उपयुक्त प्रयास किया है। भावानुवाद करने की प्रक्रिया में अनुवादक के इस प्रकार के प्रयास अनुवादक को सर्जक का दर्जा तक दिला देते हैं।

लेकिन, हमें यह भी ध्यान में रखकर चलना होगा कि अनुवादक द्वारा सर्जक की भूमिका निभाने को भावानुवाद की सीमा कहा जा सकता है। इस भूमिका के निर्वहण में भावानुवाद की यह सीमा भी निहित है कि अनूदित पाठ में अनुवादक की अपनी शैली भी हावी हो जाती है, अनूदित पाठ में मौलिक लेखक के व्यक्तित्व की तुलना में अनुवादक के व्यक्तित्व की झलक उभर आती है। कभी–कभी तो भावानुवाद की गई रचना अनुवादक की स्वयं की मूल रचना का रूप तक ग्रहण कर लेती है। इसलिए भावानुवाद में भी यह अपेक्षा की जाती है कि अनुवादक मूल की संगीत, लय, बलाघात, स्वराघात, व्यंग्यार्थ, लक्ष्यार्थ आदि शैलीपरक भाषिक विशेषताओं को जहाँ तक हो सके, बनाए रखने का प्रयास करे। जैसे, 'What a dish!' के लिए 'क्या व्यंजन है!' के स्थान पर 'इस व्यंजन का तो जवाब नहीं!' अनुवाद करना।

भावानुवाद को सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद के लिए सर्वाधिक उपयोगी माना जाता है। इसे विशेष तौर पर साहित्यिक–सांस्कृतिक रचनाओं और मुहावरों आदि के अनुवाद के लिए व्यवहार में लाया जाता है। साहित्यिक रचनाएँ तथ्य–प्रधान, विचार–प्रधान नहीं होती हैं। उनमें सूक्ष्म–सरल और तरल भाव होते हैं। वहीं, उनमें संश्लिष्ट अर्थछवियाँ भी विद्यमान रहती हैं। इसलिए साहित्यिक रचनाओं के भावानुवाद को सर्वोत्तम माना जाता है। उमर खैयाम की रुबाइयात का फिट्ज़्जेराल्ड द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद भावानुवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। ऐसी ही प्रसिद्धि फिट्ज़्जेराल्ड के अनुवाद के आधार पर हरिवंशराय बच्चन के द्वारा किए गए अनुवाद को प्राप्त हुई है जिसमें उन्होंने भावों को अत्यधिक प्रश्रय दिया है। मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद में भी अनुवादक, भावानुवाद की युक्ति को व्यवहार में लाता है। वास्तव में भावानुवाद को अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाइयों के समाधान का एक अच्छा साधन कहा जा सकता है।

भावानुवाद का विस्तार, हमें **'व्याख्यानुवाद'** अथवा **'विस्तारानुवाद'** के रूप में नजर आता है। इसका अर्थ है – मूल के आशय अथवा भाव को लक्ष्य भाषा में व्यक्त करते समय अनुवादक शब्द–विशेष आदि की व्याख्या का भी सहारा ले लेता है, उसे विस्तार से स्पष्ट कर देता है। इसलिए इसे 'व्याख्यानुवाद' अथवा 'विस्तारानुवाद' भी कह दिया जाता है। यह स्रोत भाषा सामग्री के संदेश को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने के लिए अनूदित पाठ को अपेक्षाकृत अधिक शब्दों–वाक्यों आदि को वहन करते हुए विस्तार देना है। अनुवाद में यह विस्तार (elaboration) अथवा विस्तार (expansion) दो स्तरों पर संभव होता है – शब्दगत विस्तार; और वाक्यगत–विस्तार। उदाहरण के लिए, हिंदी के 'विधाता' शब्द के लिए अंग्रेजी में 'The creater of this world' कहना। इसी तरह, 'सुहाग उजड़ना' के लिए 'death of one's husband', 'जल चढ़ाना' के लिए 'to offer oblation prayers' लिखना, 'बच्चों का खेल' के लिए 'child's play', 'टाँग खींचना' के लिए 'to pull some one's leg', और 'आँखों में धूल झोंकना' के लिए 'to throw dust in eyes' लिखना। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण हैं :

अक्षत	:	unbroken (rice)
पूरी / पूड़ी	:	fried flour cake
सेवाश्रम	:	A centre of social service
गंगा स्नान	:	a holy dip
जनेऊ	:	sacred thread
चिलम	:	an earthen pipe
आचार्य	:	a spiritual teacher or master
कुबेर	:	a God of wealth
तंदूर	:	a clay oven
बिनौला	:	cotton seed
भूसी	:	rice bran

खली	:	deoiled cake
उपला	:	cow dung cake
कुलदीपक	:	hope of family/pride of family/symbol of glory of family
लक्ष्मण–रेखा	:	exceeding one's limit is to invite trouble
दीक्षा–स्नान / बपतिस्मा	:	baptism

जब अनूद्य सामग्री के किसी शब्द अथवा मुहावरे आदि का लक्ष्य भाषा में समतुल्य शब्द–मुहावरा उपलब्ध नहीं होता तो अनुवादक उसे विस्तृत रूप से स्पष्ट करता है। ऐसा खास तौर पर सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों वाले शब्दों के मामले में होता है। उदाहरण के लिए, यदि हिंदी के 'साड़ी' शब्द का अंग्रेजी में अनुवाद करते समय उसका संभवतः इस प्रकार विस्तृत अनुवाद करना पड़ सकता है कि 'a long piece of cloth, usually four to five metres, used by women in India to cover their bodies'. इसी प्रकार, वाक्य का विस्तार भी किया जा सकता है। वाक्य के स्तर पर इस प्रकार के विस्तार का कारण वाक्य–संरचना की आवश्यकता भी हो सकती है, मूल वाक्य में व्यक्त घटना अथवा व्यक्ति के बारे में अनुवादक का बोध भी हो सकता है अथवा मूल भाषा में शामिल सुविख्यात, ऐतिहासिक या पौराणिक चरित्र या फिर घटनाओं की जानकारी देना भी।

उपर्युक्त कारणों में से यदि हम स्रोत सामग्री के वाक्य के विस्तार की बात करें तो इसका मुख्य कारण, लक्ष्य भाषा की वाक्य–संरचना की आवश्यकता को पूरा करना हो सकता है यानी जब तक अनूदित वाक्य में दो–एक शब्द जोड़े न जाएँ तब तक उसकी वाक्य रचना भाषा की सहज प्रकृति वाली नहीं बन पाएगी। इसके अलावा, मूल वाक्य में व्यक्त घटना अथवा उल्लिखित व्यक्ति का अनुवादक और पाठक को स्पष्ट रूप से बोध कराने के लिए भी वाक्य के स्तर पर विस्तार दिया जा सकता है। वहीं, स्रोत भाषा पाठ में शामिल किसी प्रतिष्ठित और सुविख्यात, ऐतिहासिक अथवा पौराणिक चरित्र या फिर सुप्रसिद्ध घटनाओं की जानकारी देने के लिए भी अनुवादक के द्वारा वाक्य के स्तर पर विस्तार की संभावना रहती है।

वैसे, स्रोत भाषा में उपलब्ध मूल पाठ की तुलना में अनूदित पाठ अधिक लंबा और विस्तार हो जाने के कारण इस प्रकार के अनुवाद में मूल की सादृश्यता बनी नहीं रह पाती; लक्ष्य भाषा में मूल का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

2.5.5 प्रतिस्थापन (Substitution)

अनुवाद की एक प्रविधि के रूप में अनुवादक प्रतिस्थापन का सहारा भी ले सकता है। 'प्रतिस्थापन' का तात्पर्य स्रोत भाषा पाठ के शब्द अथवा व्याकरणिक इकाई के अर्थ / कथ्य में परिवर्तन किए बिना लक्ष्य भाषा के शब्द या व्याकरणिक इकाई में प्रस्तुत कर देना है। यह है कि लक्ष्य भाषा में उपलब्ध कुछ–कुछ समान या निकटतम संभव अभिव्यक्ति को ही पूरी तरह से समानार्थक अभिव्यक्ति के रूप में प्रयुक्त करके अनुवाद में प्रतिस्थापित कर देना है। लेकिन ऐसा करते समय यह सावधानी बरतनी होती है कि मूल वाक्य अथवा पाठ का कथ्य या मंतव्य यथावत बना रहे, उसमें प्रयुक्त किए जा रहे शब्दों के जरिए व्यक्त अर्थ, स्रोत भाषा पाठ के मूल अर्थ से किसी प्रकार से भिन्न न हो। हालाँकि यह

जोखिम–भरा प्रयास होता है, लेकिन अनुवादक का ज्ञान एवं अनुभव उसके इस कार्य में सहायक होता है। उदाहरण के लिए, हिंदी के 'चटनी' शब्द के लिए 'pickle', 'रायता' के लिए 'curd' लिखना। इसी प्रकार, 'अँगूठी' के लिए 'ring', 'चूड़ी' के लिए 'bangle', 'पायल' के लिए 'an anklet', 'हार' (गले का आभूषण) के लिए 'necklace', 'पायदान' के लिए 'doormat', 'देवता' के लिए 'deity', 'नरक' के लिए 'hell' तथा 'कामदेव' के लिए 'cupid' लिखना आदि। वाक्यांश के स्तर पर देखें तो 'As soon as I got up' का अनुवाद 'जैसे ही मैं उठा' के स्थान पर 'मेरे उठते ही' करना भी प्रतिस्थापन की युक्ति को अपनाना है।

हालाँकि शब्द–प्रतिस्थापन करते समय अनुवाद को देश–काल के संदर्भ को भी ध्यान में रखना जरूरी हो जाता है। जैसे, अमेरिका में 'corn' शब्द हिंदी के 'मक्का' शब्द के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, जबकि यही शब्द इंगलैंड आदि कतिपय देशों में 'खाद्यान्न' (foodgrain) के अर्थ में व्यवहार में लाया जाता है।

2.5.6 परित्याग (Deletion)

स्रोत भाषा पाठ के भाषिक रूप के किसी पाठगत अभिलक्षणों या अभाषिक तत्वों की अननुवाद्यता की स्थिति में कभी–कभी उसे यथावत ग्रहण करना, टिप्पणी लिखते हुए यथावत ग्रहण करना, शाब्दिक अनुवाद या भावानुवाद अथवा प्रतिस्थापन करना जैसे विकल्प व्यवहार में लाए जाते हैं। लेकिन यदि अनुवादक यह महसूस करता है कि इस प्रकार के प्रयास संभव अथवा सार्थक नहीं हैं तो वह अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए अननूद्य अभिव्यक्तियों का परित्याग कर सकता है। उदाहरण के लिए, हिंदी की 'सोलह पकवान' या 'छप्पन भोग' जैसी अभिव्यक्तियों के समतुल्य अंग्रेजी अभिव्यक्ति के अभाव में उसका परित्याग कर केवल 'enjoyable meals' लिख देना। इसी प्रकार की स्थिति 'सोलह कलाएँ' के अंग्रेजी अनुवाद की भी होगी।

अनुवाद की एक युक्ति के रूप में परित्याग का व्यवहार मूल में से कुछ छोड़ना है, जिसे 'अनुवाद में कुछ छोड़ना' अथवा 'अनुवाद में लोप' भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसके लिए 'Ommission in translation' पद को व्यवहार में लाया जाता है। अनुवादक के इस प्रकार के प्रयास के मूल में अनूदित पाठ को लक्ष्य भाषी पाठक वर्ग के लिए संप्रेषणीय बनाना ही होता है।

अनुवाद की एक युक्ति के रूप में यह प्रविधि एक हद तक सहज रूप से स्वीकार की जाती है। वैसे, स्रोत भाषा की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का परित्याग करते समय अनुवादक को इतना तो अवश्य ही ध्यान रखना चाहिए कि इससे मूल कथ्य आहत न हो। अनूद्य पाठ को संप्रेषणीय बनाने की दृष्टि से अनुवादक का यह विकल्प–प्रयोग एक हद तो स्वीकार किया जा सकता है, लेकिन इसमें जोखिम बहुत है क्योंकि अनुवादक का इस प्रकार का प्रयास उसे काफी महँगा पड़ सकता है।

2.5.7 अनुवादकीय टिप्पणी (Translator's Note or Complementation)

एक अन्य युक्ति के रूप में अनूदित पाठ में अनुवादकीय टिप्पणी का समावेश करना शामिल है। अननुवाद्यता की चुनौती के समाधान के रूप में अनुवादक स्रोत भाषा के शब्द अथवा अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा में यथावत ग्रहण तो कर लेता है, लेकिन लिप्यंतरित शब्द के साथ वह अनूदित पाठ में अपनी ओर से अनुवादकीय टिप्पणी भी शामिल कर

लेता है। इस टिप्पणी में अननुवाद्य शब्द में अंतर्निहित उसकी पूरी अर्थ–छवि को विस्तार से समझाया जाता है या संदर्भ के अनुसार लक्ष्य भाषा में कोई अर्थ बनता हो तो उसे कोष्ठक में दे दिया जाता है। ऐसा करके अनुवादक जानकारी के दायरे से बाहर के अर्थ–संदर्भ को लक्ष्य भाषा के पाठकों की जानकारी के दायरे में ले आता है। उदाहरण के लिए, हिंदी के 'बैंगन का भरता' के लिए 'Baigan ka bharta' लिखना और उसके साथ यह टिप्पणी देना – 'a dish prepared from meshed and fried bringles'। इसी प्रकार, 'करवा चौथ' के लिए 'Karva Chauth' लिखना और उसके बाद यह टिप्पणी देना – 'the festival where traditionally married women fast for the long lives of their husbands'। मॉरिशस के महात्मा गाँधी इंस्टीट्यूट के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. राजरानी गोबिन ने अपने 'सांस्कृतिक शब्दकोश' को तैयार करते समय इसी युक्ति को अपनाया है। हिंदी भाषा से अनभिज्ञ लोगों के बीच भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार करने और भारतीय डायस्पोरा में भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने के लिए उन्होंने इस शब्दकोश को तैयार किया है। यह कोश अंग्रेजी के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक शब्दावली से परिचित होता है। यह अनुवादकों के लिए भी समान रूप से उपयोगी है। डॉ. गोबिन द्वारा कोश में दी गई टिप्पणियों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

डोसा : 'dosa' (a south Indian crepe or pancake made from the batter of fermented rice and black gram)

उत्तपम : 'uttapam' (thick pancake made from the batter of fermented rice and black gram to which onions, tomatoes, chillies and other vegetables are added during cooking, Indian pizza)

चिवड़ा : 'chiwra' (rice beaten flat after roasting boiled rice and grinding it)

स्वयंवर : 'swayamvar' (ancient Indian custom wherein a bride chose her husband from amongst a galaxy of suitors)

महावर : 'mahavar' (natural sustance used by married women to adorn their feet, shellac)

सिंदूर : 'sindur' (a kind of red powder used by married women to decorate the parting of their hair, vermillion)

उबटन : 'ubtan' (paste rubbed on the body (before bath) to clearn and give a soft texture to the skin)

टिकली : 'tikli' (an auspicious small round object gummed on the forehead of a Hindu married woman)

धर्मशाला : 'dharamshala' (charitable place of rest for travellers and pilgrims)

अनुवादक, इस प्रकार की टिप्पणी लिप्यंतरित शब्द के साथ या तो कोष्ठक में दे देता है या फिर पाद–टिप्पणी के रूप में उसी पृष्ठ पर या अध्याय/ग्रंथ के अंत में दे देता है। इससे लक्ष्य भाषा के पाठक को स्रोत भाषा के सांस्कृतिक तत्व के वास्तविक अर्थ को

समझने और उसके निकटतम समतुल्य की जानकारी प्राप्त करने में मदद मिल जाती है। ऐसा करने से अनूदित पाठ के पाठक को मूल की सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं का बोध हो जाता है।

इस युक्ति के संदर्भ में हालाँकि यह भी स्वीकार किया जाता है कि मूल भाषा के शब्द लिख देने और उनकी व्याख्या करने वाली पाद–टिप्पणियों देने से अनूदित पाठ की भाषा सहज नहीं रह जाती और उसकी पठनीयता कमजोर पड़ जाती है। फलस्वरूप अनुवाद नीरस हो जाता है। इसके अलावा, पाठ का अर्थ ग्रहण करने में समय भी लगता है और इससे अनुवाद की गंध भी आएगी।

2.6 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि मूल पाठ के कथ्य–संवेदना को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने के दौरान अनुवादक को विभिन्न प्रकार की समस्याओं–चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ना होता है। वह तरह–तरह की युक्तियाँ अपनाकर स्रोत एवं लक्ष्य भाषा पर अपने अधिकार, विषय ज्ञान और सांस्कृतिक बोध आधारित अपनी योग्यता–सामर्थ्य और प्रतिभा के बल पर अनुवाद कर्म करता है। उसके द्वारा अपनाए गए विभिन्न उपाय 'अनुवाद की प्रविधियाँ' कहलाती हैं। इन्हें 'अनुवाद की युक्तियाँ/उपाय/रणनीतियाँ' भी कह दिया जाता है। इसके अलावा, कुछ लोग इन्हें 'अनुवाद की व्यूह–विधियाँ/विधियाँ/क्रियाविधियाँ' भी कहने के पक्षधर हैं। वास्तव में ये सभी 'प्रविधियाँ' के पर्याय नजर आते हैं और इनमें से 'अनुवाद की प्रविधियाँ' ही सर्वाधिक प्रचलित शब्द है।

अनुवादक को अनुवाद कर्म के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रविधियाँ अपनाने की आवश्यकता पड़ती है। अनुवाद चिंतन करने वाले विभिन्न विद्वानों ने अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों का उल्लेख किया है। उन सभी के विचारों के आलोक में अनुवाद की प्रमुख प्रविधियाँ हैं – अंगीकरण, अनुकूलन, शब्दानुवाद, भावानुवाद, अनुसृजन, प्रतिस्थापन, परित्याग; और अनुवादकीय टिप्पणी का समावेश। कमोबेश इन सभी प्रकार की युक्तियों को अनुवाद करते समय तरह–तरह से अपनाया जाता है। यह भी ध्यान रखने योग्य है कि इन सभी प्रविधियों को सभी प्रकार के साहित्य – ज्ञानात्मक साहित्य और सृजनात्मक साहित्य – के अनुवाद पर लागू नहीं किया जा सकता। इसके लिए स्रोत भाषा पाठ की प्रकृति–स्वरूप के साथ अनुवादक के दोनों भाषाओं संबंधी ज्ञान एवं विषय बोध पर निर्भर करता है कि वह कब और किस समय अनुवाद की किस प्रविधि अथवा किन प्रविधियों को अपनाकर अनुवाद कर्म करे। वह मूल के आलोक में और लक्ष्य भाषा की आवश्यकता की अनुरूपता को ध्यान में रखते हुए अपने विवेक के अनुसार अनुवाद की सभी प्रकार की प्रविधियों को भी अपना सकता है। उसका मूलभूत लक्ष्य अनूदित पाठ को सहज संप्रेषणीय रूप वाला बनाकर लक्ष्य भाषा प्रयोक्ताओं के समक्ष प्रस्तुत करना होता है।

यहाँ हमें यह भी ध्यान में रखकर चलना होगा कि अनुवादक के द्वारा अनुवाद करते समय जो भी युक्तियाँ अपनाई जाती हैं, वह मूलतः शब्द के स्तर पर व्यवहृत होती नजर आती हैं – भले ही वह अंगीकरण हो, अनुकूलन हो, शाब्दिक अनुवाद हो या फिर भावानुवाद आदि। वास्तव में अनुवादक, शब्द के धरातल पर इन्हें लागू करते हुए लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप की वाक्य संरचना में समायोजित करता है। कहने का अभिप्राय यह

है कि वाक्य के स्तर पर अनुवाद की युक्तियों को अपनाने का प्रयास नहीं किया जाता। अगर ऐसा किया जाए तो लक्ष्य भाषा की भाषिक संरचना आहत होती है और अनूदित पाठ सहज रूप से बोधगम्य नहीं रह जाता है। इस संदर्भ में अंग्रेजी और हिंदी की वाक्य संरचना का उल्लेख किया जा सकता है। हिंदी में कर्तृवाच्य संरचना की सामान्य प्रवृत्ति है, जबकि अंग्रेजी में कर्मवाच्य। हिंदी में 'द्वारा' शब्द का प्रयोग करते हुए अनुवाद करने की आम तौर पर जो प्रवृत्ति पाई जाती है उसके मूल में अंग्रेजी की वाक्य संरचना का प्रभाव अधिक है। जैसे 'यह कार्य मेरे द्वारा किया गया।' वाक्य मूलतः अंग्रेजी के 'The work has been done by me.' वाक्य का प्रभाव लिए हुए है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि अनुवादक मूल पाठ के कथ्य का समग्र रूप से अंतरण – भाषांतरण और सांस्कृतिक अंतरण – करने के लिए कोई सार्थक विकल्प का चयन करता है। अनुवाद कार्य के दौरान अनुवादक को दोनों भाषाओं की संरचना, प्रकृति, व्याकरण, शब्द संयोजक पर्याय, शैलीगत अंतर, सामाजिक–सांस्कृतिक तत्व आदि संबंधी कई प्रकार की समस्याओं–सीमाओं का सामना भी करना पड़ता है। अनुवादक अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए वस्तु, अवधारणा, व्यवहार पद्धति आदि के बोधक शब्द को लक्ष्य भाषा में यथावत ग्रहण करता है, अनुवादकीय टिप्पणी का समावेश करता है, अनुकूलन करता है, शब्द और/अथवा भाव का अनुवाद करता है, प्रतिस्थापन करता है या फिर आवश्यकता के अनुसार उसका परित्याग तक कर देता है। तरीका भले ही कोई भी अपनाया जाए, लेकिन अननुवाद्यता की समस्या का हल करने का प्रयास करना ज्यादा महत्वपूर्ण है। अनुवाद–कर्म की कठिन राह को निष्कटंक बनाने की दिशा में अनुवादक के द्वारा अपनाई गई अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों से अनूदित पाठ को संप्रेष्य तथा बोधगम्य बनाने की भावना विशेष आदर–सम्मान की अधिकारी है।

2.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) 'अनुवाद की प्रविधियाँ' से आप क्या समझते हैं? इसका अर्थ और स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

2) अनुवाद कर्म करते हुए, अनुवादक को विभिन्न प्रकार की प्रविधियाँ अपनाने की आवश्यकता क्यों पड़ती है? चर्चा कीजिए।

3) अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों के बारे में विद्वानों के मतों का विवेचन कीजिए।

4) अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

2.8 उपयोगी पुस्तकें

- सांस्कृतिक हिंदी शब्दकोश, डॉ. राजरानी गोबिन, नीता प्रकाशन, नई दिल्ली।
- त्रैमासिक पत्रिका 'अनुवाद', अंक 166 (अनुवाद की युक्तियाँ : एक पुनर्विचार, डॉ. राजेंद्र प्रसाद पांडेय (अनु. डॉ.हरीश कुमार सेठी), भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, जनवरी–मार्च 2016।

- Dictionary of Translation Studies, M.Shuttleworth & M. Cowie, Manchester, UK : St. Jerome Publishing, 1997. Ed. Mana Baker and Gabriela Saldanha, Routledge.
- Routledge Encyclopaedia of Translation Studies, Landan & New York, 2009.
- Translation Studies, Susan Bassnett, New York : Routledge, Third Edition, 2002.
- The Translation Studies Reader, Ed. Lawrence Venuti, New York : Routledge, Second Edition, 2004.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY